# अपठित बोध

**अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न**

## अपठित गद्यांश

**निर्देश**—*निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उन पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

**(1)** राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह है कि देश के सभी नागरिक, चाहे वे किसी भी संप्रदाय, जाति, धर्म, भाषा अथवा क्षेत्र से संबंधित हों, इन सब सीमाओं से ऊपर उठकर इस समूचे देश के प्रति वफ़ादार और आत्मीयतापूर्ण हों। इसके लिए यदि उनको अपने निजी स्वार्थ अथवा समूह के स्वार्थ का भी त्याग करना पड़े तो उसके लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए और उनके लिए देश का हित सर्वोपरि होना चाहिए, किंतु कभी-कभी तो लगता है कि देश की स्वतंत्रता के बाद हम राष्ट्रीय एकता से विमुख होकर राष्ट्रीय विघटन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। स्वतंत्रता के पहले गांधी जी के नेतृत्व में पूरा देश एक होकर अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध लड़ा था, परंतु उसके बाद पुनः हम धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता के नाम से आपसी झगड़ों में उलझ गए हैं। कई बार ऐसा लगता है कि हमारे देश में असमिया, बंगाली, पंजाबी, मराठा, मद्रासी इत्यादि तो हैं, पर भारतीय विरले ही हैं। हमारा देश प्राचीनकाल से ही विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, विचारधाराओं तथा परंपराओं का समन्वय-स्थल रहा है, परंतु आधुनिककाल में जब से विभिन्न धर्मों और संप्रदायों में अलगाव होने लगा, पारस्परिक द्वेष, घृणा और संघर्ष बढ़ने लगा, तभी से राष्ट्र प्रत्येक दृष्टि से कमज़ोर होने लगा। राजनैतिक दल इस पारस्परिक तनाव का लाभ उठाकर राजनैतिक स्वार्थ पूरा करने लगे। इसीलिए नेहरू जी ने कहा था, "मैं सांप्रदायिकता को देश का सबसे बड़ा शत्रु मानता हूँ।"

1. **राष्ट्रीय एकता का अर्थ है–**
   (क) परस्पर विरोधी जातियों का एक होना
   (ख) विभिन्न भाषा-भाषियों में एक-दूसरे की भाषा के प्रति लगाव होना
   (ग) एक-दूसरे के धार्मिक स्थलों के प्रति श्रद्धा-भाव होना
   (घ) सभी भेदभावों को भूलकर देश के प्रति वफ़ादार और आत्मीयतापूर्ण होना।
2. **'देश का हित सर्वोपरि होना चाहिए'–कथन का तात्पर्य है–**
   (क) अपना काम छोड़कर केवल देश-सेवा करना
   (ख) देश के लिए अपनी प्रियवस्तु का बलिदान करना
   (ग) देश के लिए जातिगत स्वार्थों का त्याग करना
   (घ) स्वार्थ त्यागकर देश के हित की चिंता करना।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–लेखक को लग रहा है कि हम राष्ट्रीय विघटन की ओर बढ़ रहे हैं।
   **कारण (R)**–हम धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता के नाम से आपसी झगड़ों में उलझ गए हैं।
   (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'लेखक के अनुसार राष्ट्र लगातार कमज़ोर हो रहा है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) क्षेत्रीयता पनप रही है।
   (2) धर्म के नाम पर आपसी झगड़े होते हैं।
   (3) सांप्रदायिक अलगाव, द्वेष, घृणा और संघर्ष बढ़ने लगा है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है–**
   (क) राष्ट्रीय एकता (ख) धर्म और संप्रदाय
   (ग) सांप्रदायिकता (घ) राष्ट्रीय विचारधारा।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क)।

**(2)** भारत के ऋषि-मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। वे प्रकृति की दैवी शक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे 'परमेश्वरी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहरा चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था उसे दैवी प्रवृत्ति माना।

भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के रूप में किया गया है। उनको संतान की तरह पाला जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप कहा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दंड का विधान भी था।

मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक संपदा पर केवल उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्त्व को 'तुलसी' और 'पीपल' के उदाहरण से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों की देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष को परम रक्षक और मित्र बताया गया है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, मरुस्थल का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है इसलिए हमें वृक्षमित्र होकर जीवनयापन करना चाहिए।

1. **भारत के ऋषि-मुनियों के अनुसार जीवन की समृद्धि आधारित है–**
   (क) प्रकृति के संरक्षण पर (ख) पर्यावरण की समृद्धि पर
   (ग) अपार धन-संग्रह पर (घ) असीमित ज्ञान-भंडार पर।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. गद्यांश में 'आसुरी प्रवृत्ति' का क्या आशय है–
(क) राक्षसी प्रवृत्ति
(ख) मानवता की विनाशक प्रवृत्ति
(ग) पर्यावरण के लिए अहितकर प्रवृत्ति
(घ) हानिकारक प्रवृत्ति।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
**कथन (A)**–हरे भरे पेड़ों को काटना पाप कहा जाता था।
**कारण (R)**–उनको संतान की तरह पाला जाता था।
(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. 'वृक्ष हमारे सच्चे मित्र हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
(1) वे हमें छाया और फल देते हैं।
(2) दूषित वायु को हटाकर प्राणवायु देते हैं।
(3) मनुष्य को पवित्रता प्रदान करते हैं।
(क) (1) सही है (ख) (2) सही है
(ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।

5. तुलसी और पीपल का उदाहरण देकर लेखक क्या बताना चाहता है–
(क) ये वनस्पतियाँ रोग दूर करती हैं
(ख) पीपल एक छायादार पेड़ है
(ग) भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा का बड़ा महत्त्व है
(घ) ये दोनों पेड़ देवता हैं।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(3)** जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ों में बाँट देता है, लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो, लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था; क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

1. बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं; क्योंकि–
(क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं
(ख) थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव नहीं होती
(ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधारहित नहीं होता
(घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें आती हैं।

2. पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार क्या सिद्ध करते हैं–
(क) छोटी-छोटी असफलताओं के बाद ही बड़ी सफलता मिलती है
(ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है
(ग) हर प्रहार उसे अंदर से खोखला बनाता है
(घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
**कथन (A)**–व्यक्ति सफलताओं के बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है।
**कारण (R)**–असफल होने पर वह गुरु के पास जाता है।
(क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

4. 'समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
(1) समस्याएँ हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं।
(2) हमें चिंतनशील बनाती हैं।
(3) हमें आलसी बनाती हैं।
(क) (1) सही है (ख) (2) सही है
(ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. 'समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते।'– वाक्य में वाच्य का भेद है–
(क) कर्तृवाच्य (ख) भाववाच्य
(ग) कर्मवाच्य (घ) क्रियावाच्य।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

**(4)** मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। ऐसा लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी रह ही नहीं गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता; जो भी कुछ करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। यह चिंता का विषय है। तिलक और गांधी के सपनों का भारतवर्ष क्या यही है? विवेकानंद और रामतीर्थ का आध्यात्मिक ऊँचाई वाला भारतवर्ष कहाँ है? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान, सुसंस्कृत और सभ्य भारतवर्ष पतन के किस गहन गर्त में जा गिरा है? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया है?

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है, किंतु ऐसी दशा में हमारा उद्धार जीवन-मूल्यों में आस्था रखने से ही होगा। ऐसी स्थिति में हताश हो जाना ठीक नहीं है।

1. **'मन बैठना' मुहावरे का अर्थ है–**
   (क) निराश होना (ख) खुश होना
   (ग) आराम करना (घ) चिंतन करना।
2. **समाचार-पत्रों में आपराधिक घटनाओं के समाचारों की भरमार देखकर लेखक को कैसा लगता है–**
   (क) जैसे देश में कानून नहीं है
   (ख) जैसे देश में पुलिस नहीं है
   (ग) जैसे देश में कोई ईमानदार आदमी नहीं रहा है
   (घ) जैसे देश में अराजकता फैल गई है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।
   **कारण (R)**–जो भी कुछ करेगा, लोग उसमें दोष खोजने लगेंगे।
   (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'ऐसा लगता है कि देश में कोई ईमानदार आदमी रह ही नहीं गया है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) सब भ्रष्टाचारी हो गए हैं।
   (2) समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी के समाचार भरे रहते हैं।
   (3) हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा सकता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (2) व (3) सही हैं (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **हमारा उद्धार किससे होगा–**
   (क) पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने से
   (ख) जीवन-मूल्यों में आस्था रखने से
   (ग) जीवन-मूल्यों को त्यागने से
   (घ) अपराधी बन जाने से।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

**(5)** भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया। उसकी दृष्टि में मनुष्य के भीतर जो आंतरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन और बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। इस देश के कोटि-कोटि दरिद्र जनों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए अनेक कायदे-कानून बनाए गए। जिन लोगों को इन्हें कार्यान्वित करने का काम सौंपा गया, वे अपने कर्तव्यों को भूलकर अपनी सुख-सुविधा की ओर ज़्यादा ध्यान देने लगे। वे लक्ष्य की बात भूल गए और लोभ-मोह जैसे विकारों में फँसकर रह गए। आदर्श उनके लिए मज़ाक का विषय बन गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है–लोग लोभ और मोह में पड़कर अनर्थ कर रहे हैं, इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

1. **भारतवर्ष ने किस बात को अधिक महत्त्व नहीं दिया–**
   (क) जीवन-मूल्यों को
   (ख) भौतिक वस्तुओं के संग्रह को
   (ग) अतिथि-सत्कार को
   (घ) आध्यात्मिकता को।
2. **मनुष्य के भीतर बैठा आंतरिक तत्त्व कैसा है–**
   (क) चरम और परम है (ख) अस्थिर और नश्वर है
   (ग) तुच्छ और विकारी है (घ) उपेक्षा के योग्य है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–भारतवर्ष ने कभी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को अधिक महत्त्व नहीं दिया।
   **कारण (R)**–भौतिक वस्तुएँ व्यर्थ हैं।
   (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
4. **'लोग लोभ और मोह में पड़कर अनर्थ कर रहे हैं।'–उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) कायदे-कानूनों को कार्यान्वित करने वाले सुख-सुविधा में खो गए।
   (2) वे लक्ष्य की बात भूल गए।
   (3) लोगों को अनर्थ करने में सुख मिलता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (2) व (3) सही हैं (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **गद्यांश में लेखक क्या बताना चाहता है–**
   (क) भारतीय आदर्शों का महत्त्व
   (ख) भारत में फैली अव्यवस्था
   (ग) लोभ-मोह आदि विकारों का महत्त्व
   (घ) भारत के कानून-कायदे।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

**(6)** कहा जाता है कि हमारा लोकतंत्र यदि कहीं कमज़ोर है तो उसकी एक बड़ी वजह हमारे राजनैतिक दल हैं। वे प्रायः अव्यवस्थित हैं, अमर्यादित हैं और अधिकांशतः निष्ठा और कर्मठता से संपन्न नहीं हैं। हमारी राजनीति का स्तर प्रत्येक दृष्टि से गिरता जा रहा है। लगता है उसमें सुयोग्य और सच्चरित्र लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। लोकतंत्र के मूल में लोकनिष्ठा होनी चाहिए, लोकमंगल की भावना और लोकानुभूति होनी चाहिए और लोकसंपर्क होना चाहिए। हमारे लोकतंत्र में इन आधारभूत तत्त्वों की कमी होने लगी है, इसलिए लोकतंत्र कमज़ोर दिखाई पड़ता है। हम प्रायः सोचते हैं कि हमारा देश-प्रेम कहाँ चला गया, देश के लिए कुछ करने, मर-मिटने की भावना कहाँ चली गई? त्याग और बलिदान के आदर्श कैसे, कहाँ लुप्त हो गए? आज हमारे लोकतंत्र को स्वार्थांधता का घुन लग गया है। क्या राजनीतिज्ञ,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

क्या अफ़सर, अधिकांश यही सोचते हैं कि वे किस तरह से स्थिति का लाभ उठाएँ, किस तरह एक-दूसरे का इस्तेमाल करें। आम आदमी अपने आपको लाचार पाता है और ऐसी स्थिति में उसकी लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाने लगती हैं।

लोकतंत्र की सफलता के लिए हमें समर्थ और सक्षम नेतृत्व चाहिए, एक नई दृष्टि, एक नई प्रेरणा, एक नई संवेदना, एक नया आत्मविश्वास, एक नया संकल्प और समर्पण आवश्यक है। लोकतंत्र की सफलता के लिए हम सब अपने आप से पूछें कि हम देश के लिए, लोकतंत्र के लिए क्या कर सकते हैं? और हम सिर्फ़ पूछकर ही न रह जाएँ, बल्कि संगठित होकर समझदारी, विवेक और संतुलन से लोकतंत्र को सफल और सार्थक बनाने में लग जाएँ।

1. **हमारे लोकतंत्र की कमज़ोरी का कारण है–**

   (क) यहाँ के नागरिक (ख) राजनैतिक दल
   (ग) धार्मिक संस्थाएँ (घ) न्यायपालिका।

2. **लोकतंत्र का मूल तत्त्व नहीं है–**

   (क) लोकमंगल के प्रति उपेक्षा
   (ख) लोकनिष्ठा की अपेक्षा
   (ग) लोकसंपर्क की इच्छा
   (घ) लोक के सुख-दुःख की अनुभूति।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

   **कथन (A)**–आज हमारे लोकतंत्र को स्वार्थांधता का घुन लग गया है।

   **कारण (R)**–आम आदमी की लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाने लगी हैं।

   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'हमारा लोकतंत्र यदि कहीं कमज़ोर है तो उसकी वजह हमारे राजनैतिक दल हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

   (1) वे अव्यवस्थित और अमर्यादित हैं।
   (2) वे निष्ठा और कर्मठता से संपन्न नहीं हैं।
   (3) उनके पास धन की कमी है।

   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही हैं (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. **हमारे राजनैतिक दलों की विशेषता नहीं है–**

   (क) वे अव्यवस्थित हैं
   (ख) अमर्यादित हैं
   (ग) निष्ठा और कर्मठतारहित हैं
   (घ) पूर्णतः देश के प्रति समर्पित हैं।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

**(7)** एक ज़माना था जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी। सब मिल-जुलकर रहते थे। हारी-बारी, खुशी-गम, सबमें लोग एक-दूसरे के साथ थे। किसी का किसी से कुछ छिपा नहीं था। आज के लोगों को शायद लगे कि लोगों की अपनी 'प्राइवेसी' क्या रही होगी, लेकिन इस 'प्राइवेसी' के नाम पर ही तो हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए। पहले अलग चूल्हे-चौके हुए, फिर अलग मकान लेकर लोग रहने लगे, निजी स्वतंत्रता को अपनी नई परिभाषा देकर यह एकाकीपन हमने स्वयं अपनाया है। मुहल्ले में आपस में चाहे जितनी चखचख हो, यह थोड़े ही संभव था कि बाहर का कोई आकर किसी को कड़वी बात कह जाए। पूरा मोहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था।

देखते-देखते ज़माना हवा हो गया। मुहल्लेदारी टूटने लगी, आबादी बढ़ी, महँगाई बढ़ी, पर सबसे ज़्यादा जो चीज़ दुर्लभ हो गई वह थी आपसी लगाव, अपनापन। लोगों की आँखों का शील मर गया।

देखते-देखते कैसा रंग बदला है! लोग अपने-आपमें सिमटकर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं। सारे रिश्ते-नातों को उन्होंने ताक पर रख दिया है, तब फिर पड़ोसी से उन्हें क्या लेना-देना है। यह नीरस महानगरीय सभ्यता महानगरों से चलकर कस्बों और देहातों तक को अपनी चपेट में ले चुकी है। मकानों में रहने वाले एक-दूसरे को नहीं जानते। इन जगहों में आदमी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। यदि आपको फ्लैट- नंबर मालूम नहीं है तो उसी बिल्डिंग में जाकर भी वांछित व्यक्ति को नहीं ढूँढ़ पाएँगे। ऐसी जगहों में किसी प्रकार के संबंध की अपेक्षा ही कहाँ की जा सकती है।

1. **'प्राइवेसी' से क्या तात्पर्य है–**

   (क) निजता (ख) आत्मीयता
   (ग) मेलजोल (घ) भाईचारा।

2. **मुहल्लेदारी के बारे में क्या सच नहीं है–**

   (क) आपस में मिल-जुलकर रहना
   (ख) दुख-सुख में साथ देना
   (ग) अपनी बात किसी से गुप्त न रखना
   (घ) आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

   **कथन (A)**–एक ज़माना था जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी।

   **कारण (R)**–सब मिल-जुलकर रहते थे।

   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'लोग अपने-आप में सिमटकर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

   (1) सब रिश्ते-नातों को ताक पर रख दिया है।
   (2) लोगों की आँखों का शील मर गया है।
   (3) केवल पड़ोसी से संबंध रह गया है

   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही हैं (घ) (1) व (3) सही हैं।

5. **'ताक पर रखना' का अर्थ है–**

   (क) उपेक्षा करना (ख) आशा रखना
   (ग) छोड़ देना (घ) निंदा करना।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (क)।

**(8)** आज की नारी संचार प्रौद्योगिकी, वायुसेना, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, विज्ञान वगैरह के क्षेत्र में न जाने किन-किन भूमिकाओं में कामयाबी के शिखर छू रही है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ आज की महिलाओं ने अपनी छाप न छोड़ी हो। कह सकते हैं कि आधी नहीं, पूरी दुनिया उनकी है। सारा आकाश उनका है। पर क्या सही मायनों में इस आज़ादी की आँच हमारे सुदूर गाँवों, कस्बों या दूरदराज़ के छोटे-छोटे कस्बों में भी उतनी ही धमक से पहुँच पा रही है? क्या एक आज़ाद, स्वायत्त मनुष्य की तरह अपना फ़ैसला खुद लेकर मज़बूती से आगे बढ़ने की हिम्मत है उसमें?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बेशक समाज बदल रहा है, मगर यथार्थ की परतें कितनी बहुआयामी और जटिल हैं, जिन्हें भेदकर अंदरूनी सच्चाई तक पहुँच पाना आसान नहीं। आज के इस रंगीन समय में नई बढ़ती चुनौतियों से टकराती स्त्री की क्रांतिकारी आवाज़ें हम सबको सुनाई दे रही हैं। मगर यही कमाऊ स्त्री जब समान अधिकार और परिवार में लोकतंत्र की अनिवार्यता पर बहस करती या सही मायनों में लोकतंत्र लाना चाहती है तो वहाँ इसकी राह में तमाम धर्म, भारतीय संस्कृति, समर्पण, सहनशीलता, नैतिकता जैसे सामंती मूल्यों की पगबाधाएँ खड़ी की जाती हैं।
नारी की सच्ची स्वाधीनता का अहसास तभी हो पाएगा, जब वह आज़ाद मनुष्य की तरह भीतरी आज़ादी को महसूस करने की स्थितियों में होगी। *(CBSE 2015)*

1. **पूरी दुनिया और सारा आकाश औरतों का कैसे है–**
   (क) औरतें पूरी दुनिया में फैली हैं
   (ख) औरतें आकाश तक पहुँच गई हैं
   (ग) औरतें सभी क्षेत्रों में कामयाबी के शिखर छू रही हैं
   (घ) औरतों ने पूरी दुनिया को खरीद लिया है।
2. **आज़ादी की गरमाहट सुदूर गाँवों तक क्यों नहीं पहुँची है–**
   (क) वहाँ लोग स्वतंत्र नहीं हैं
   (ख) वहाँ आज भी विदेशी शासन है
   (ग) वहाँ पुरुषों को फैसला लेने का अधिकार नहीं है
   (घ) वहाँ स्त्रियों को स्वायत्त मनुष्य की तरह अपना फ़ैसला लेने का अधिकार नहीं है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–नारी को सच्ची स्वाधीनता का अहसास होगा।
   **कारण (R)**–जब वह स्वतंत्र रूप से घूम-फिर सकेगी।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
4. **'ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ आज की महिलाओं ने अपनी छाप न छोड़ी हो।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) आधी नहीं, पूरी दुनिया उनकी है।
   (2) सारा आकाश उनका है।
   (3) गाँवों में उनका ही राज है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही हैं।
5. **'ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ आज की महिलाओं ने अपनी छाप न छोड़ी हो।'– रचना के आधार पर वाक्य का भेद है–**
   (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
   (ग) संयुक्त वाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

**(9)** भारत में हरित क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाना था, लेकिन इस बात की आशंका किसी को नहीं थी कि रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल न सिर्फ़ खेतों में, बल्कि खेतों से बाहर मंडियों तक में होने लगेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है, लेकिन जिस रफ़्तार से देश की आबादी बढ़ रही है, उसके मद्देनज़र फसलों की अधिक पैदावार ज़रूरी थी। समस्या सिर्फ़ रासायनिक खादों के प्रयोग की ही नहीं है। देश के ज़्यादातर किसान परंपरागत कृषि से दूर होते जा रहे हैं। दो दशक पहले तक हर किसान के यहाँ गाय, बैल और भैंस खूँटों से बँधे मिलते थे। अब इन मवेशियों की जगह ट्रैक्टर-ट्रॉली ने ले ली है। परिणामस्वरूप गोबर और घूरे से बनी कंपोस्ट खाद खेतों में गिरनी बंद हो गई। पहले चैत-बैसाख में गेहूँ की फसल कटने के बाद किसान अपने खेतों में गोबर, राख और पत्तों से बनी जैविक खाद डालते थे। इससे न सिर्फ़ खेतों की उर्वरा-शक्ति बरकरार रहती थी, बल्कि किसानों को आर्थिक लाभ के अलावा बेहतर गुणवत्ता वाली फसल मिलती थी। *(CBSE 2015)*

1. **हरित क्रांति अपने साथ क्या नहीं लाई–**
   (क) खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भरता
   (ख) रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक
   (ग) परंपरागत खेती से किसानों की दूरी
   (घ) बेहतर गुणवत्ता वाली फसल।
2. **गोबर की खाद की विशेषता है–**
   (क) यह खेतों की उर्वरा-शक्ति को बनाए रखती है
   (ख) यह हर जगह उपलब्ध है
   (ग) किसान की सर्वाधिक पसंद है
   (घ) दुकान से खरीदी जा सकती है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग हो रहा है।
   **कारण (R)**–यह खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है।
   (क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'पहले किसान खेतों में गोबर, राख और जैविक खाद डालते थे।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) इससे खेतों की उर्वराशक्ति बरकरार रहती है।
   (2) किसानों को आर्थिक लाभ मिलता है।
   (3) फसल की गुणवत्ता बेहतर होती है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही हैं (घ) ये सभी सही हैं।
5. **इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है–**
   (क) ज़हरीले कीटनाशक (ख) हरित क्रांति
   (ग) गुणकारी फसल (घ) परंपरागत कृषि।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

**(10)** विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययनों और संयुक्त राष्ट्र की मानव-विकास रिपोर्टों ने भारत के बच्चों में कुपोषण की व्यापकता के साथ-साथ बाल मृत्यु-दर और मातृ मृत्यु-दर का ग्राफ़ काफ़ी ऊँचा रहने के तथ्य भी बार-बार ज़ाहिर किए हैं। यूनिसेफ की रिपोर्ट बताती है कि लड़कियों की दशा और भी खराब है।
पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के बाद बालिग होने से पहले लड़कियों को ब्याह देने के मामले दक्षिण एशिया में सबसे ज़्यादा भारत में होते हैं। मातृ मृत्यु-दर और शिशु मृत्यु-दर का एक प्रमुख कारण यह भी है। यह रिपोर्ट ऐसे समय पर जारी हुई है, जब बच्चों के अधिकारों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

से संबंधित वैश्विक घोषणा-पत्र के पच्चीस साल पूरे हो रहे हैं। इस घोषणा-पत्र पर भारत और दक्षिण एशिया के अन्य देशों ने भी हस्ताक्षर किए थे। इसका यह असर ज़रूर हुआ कि बच्चों की सेहत, शिक्षा, सुरक्षा से संबंधित नए कानून बने, मंत्रालय या विभाग गठित हुए, संस्थाएँ और आयोग बने। घोषणा-पत्र से पहले की तुलना में कुछ सुधार भी दर्ज हुआ है, पर इसके बावजूद बहुत सारी बातें विचलित करने वाली हैं। मसलन, देश में हर साल लाखों बच्चे गुम हो जाते हैं। लाखों बच्चे अब भी स्कूलों से बाहर हैं। श्रम-शोषण के लिए विवश बच्चों की तादाद इससे भी अधिक है। वे स्कूल में पिटाई और घरेलू हिंसा के शिकार होते रहते हैं।

परिवार के स्तर पर देखें तो संतान का मोह काफ़ी प्रबल दिखाई देगा, मगर दूसरी ओर बच्चों के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता बहुत क्षीण है। कमज़ोर तबकों के बच्चों के प्रति तो बाकी समाज का रवैया अमूमन असहिष्णुता का ही रहता है। क्या ये स्वस्थ समाज के लक्षण हैं? ***(CBSE 2015)***

1. **संयुक्त राष्ट्र की मानव-विकास रिपोर्टों में क्या बताया गया है–**
   (क) बच्चे घोर कुपोषण का शिकार हैं
   (ख) बाल मृत्यु-दर और मातृ मृत्यु-दर भी काफ़ी ज़्यादा है
   (ग) लड़कियों की दशा और भी शोचनीय है
   (घ) उपर्युक्त सभी।
2. **मातृ मृत्यु-दर और शिशु मृत्यु-दर अधिक होने का मुख्य कारण है–**
   (क) लड़कियों का विवाह कम उम्र में करवा देना
   (ख) अधिकारों की जानकारी का अभाव
   (ग) अधिक बच्चों का होना
   (घ) माता-पिता का बच्चों पर ध्यान न देना।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

   **कथन (A)**–यूनिसेफ की रिपार्ट बताती है कि भारत में लड़कियों की दशा और भी खराब है।

   **कारण (R)**–बालिग होने से पहले लड़कियों को ब्याह देने के मामले यहाँ अधिक हैं।

   (क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
4. **'बच्चों के विषय में बहुत-सी बातें विचलित करने वाली हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) देश में हर साल लाखों बच्चे गुम हो जाते हैं।
   (2) लाखों बच्चे अब भी स्कूलों से बाहर हैं।
   (3) बच्चों को खेलों की सुविधाएँ प्राप्त हैं।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।
5. **आज भी भारत में बच्चों की स्थिति कैसी है–**
   (क) सभी बच्चों को शिक्षा अवश्य दी जाती है
   (ख) कोई बच्चा श्रम-शोषण के लिए विवश नहीं है
   (ग) कोई भी बच्चा गायब नहीं होता
   (घ) विद्यालय में और घर पर भी पिटाई होती है।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

**(11)** उन दिनों मैं अपने छात्रों को आनुवंशिकी पढ़ाया करता था। उस समय मैं मांसपेशियों की कमज़ोरियों पर भी कुछ प्रयोग कर रहा था। इन प्रयोगों से ही 'एपिजेनेटिक्स की विधा निकल कर आई थी। मैं मूल कोशिकाओं के प्रतिरूप तैयार करता था। ये मूल कोशिका की एकदम ठीक नकल होते थे। इन प्रतिरूपी कोशिकाओं को मैं एक-एक करके अलग करता और उन्हें अलग-अलग वातावरण में रखता, अलग-अलग बरतनों में।

इस संस्कार में रखी कोशिकाएँ हर 10–12 घंटे में विभाजित होती हैं, एक से दो हो जाती हैं। फिर अगले 10–12 घंटे में दो से चार, और फिर चार से आठ। इसी तरह दो हफ्ते में हज़ारों कोशिकाएँ तैयार होतीं। मैंने तीन भिन्न वातावरण में कोशिकाओं की तीन भिन्न बस्तियाँ तैयार कीं। इन बस्तियों का रासायनिक वातावरण एकदम अलग-अलग था। ठीक कुछ वैसे ही जैसे हर व्यक्ति के शरीर का वातावरण अलग होता है और एक ही शरीर के भीतर भी कई तरह के वातावरण होते हैं। अलग-अलग वातावरण में भी रखी गई इन कोशिकाओं का डी०एन०ए० तो एकदम समान था। उनका पर्यावरण, उनका वातावरण भिन्न था। जल्दी ही इस प्रयोग के नतीजे सामने आने लगे।

एक बरतन में उन्हीं कोशिकाओं ने हड्डी का रूप ले लिया था, एक में मांसपेशी का और तीसरे बरतन में कोशिकाओं ने वसा या चर्बी का रूप ले लिया। यह प्रयोग इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए किया था कि कोशिकाओं की किस्मत कैसे तय होती है। सारी कोशिकाएँ एक ही मूल से निकली थीं तो नए सिरे से यह सिद्ध हुआ कि कोशिकाओं की आनुवंशिकी नियति तय नहीं करती है तो कौन करता है? जवाब था: परिवेश। पर्यावरण। वातावरण। ***(CBSE 2016)***

1. **लेखक ने आनुवंशिकी के प्रयोग के लिए सर्वप्रथम क्या किया–**
   (क) मूल कोशिकाओं के प्रतिरूप तैयार कर उन्हें भिन्न-भिन्न वातावरण में रखा
   (ख) कोशिकाओं के संस्कार को समझने का प्रयास किया
   (ग) अपने छात्रों को आनुवंशिकी का 'नियतिवाद' पढ़ाया
   (घ) कोशिकाओं की किस्मत कैसे तय होती है? इस प्रश्न का जवाब ढूँढ़ा।
2. **संस्कार में रखी कोशिकाएँ 10-12 घंटे में कितनी हो जाती हैं–**
   (क) चौगुनी (ख) तिगुनी
   (ग) दोगुनी (घ) हज़ार गुनी।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

   **कथन (A)**–इस समय मैं मांसपेशियों की कमज़ोरियों पर प्रयोग कर रहा था।

   **कारण (R)**–इन प्रयोगों से ही एपिजेनेटिक्स की विधा निकलकर आई थी।

   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'इस संस्कार में रखी कोशिकाएँ हर 10-12 घंटे में विभाजित होती हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) वे एक से दो हो जाती हैं।
   (2) दो से चार हो जाती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(3) चार से आठ हो जाती हैं।

(क) (1) सही है (ख) (2) सही है

(ग) (3) सही है (घ) ये सभी सही हैं।

5. **अपने प्रयोग के दौरान लेखक तैयार करता था–**

(क) मूल कोशिकाएँ

(ख) नई मांसपेशियाँ

(ग) मूल कोशिकाओं की नकलें

(घ) भिन्न वातावरण।

उत्तर – **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

**(12)** कम उमर में विकसित अवचेतन मन का हमारे जीवन पर असर बिलकुल हाल में समझ में आया हो, ऐसा नहीं है। कोई 500 साल से कुछ धर्म-प्रचारकों द्वारा यह कहा जाता रहा है कि किसी भी बालक को हमें छह-सात साल की उमर तक के लिए दे दीजिए। वह बड़ा होने के बाद जीवनभर हमारा ही बना रहेगा। उन्हें पता था कि पहले सात साल में सिखाया गया ढर्रा किसी व्यक्ति की जीवन-राह तय कर सकता है। उस व्यक्ति की कामनाएँ और इच्छाएँ चाहे कुछ और भी हों तो भी वह इस दौर को भूल नहीं पाता।

क्या यह मान लें कि नकारात्मक बातों से भरे हमारे इस अवचेतन मन से हमें आज़ादी मिल ही नहीं सकती? ऐसा नहीं है। इस तरह की आज़ादी की अनुभूति हर किसी को कभी-न-कभी ज़रूर होती है। इसका एक उदाहरण है, प्रेम की मानसिक अवस्था। प्रेम में, स्नेह में अभिभूत व्यक्ति का स्वास्थ्य कुछ अलग चमकता हुआ दिखता है, उसमें ऊर्जा दिखती है।

वैज्ञानिकों को हाल ही में पता चला है कि जो लोग रचनात्मक ढंग से सोचने की अवस्था में होते हैं, आनंद में रहते हैं, उनका चेतन मन 90 प्रतिशत सजग रहता है। चेतन अवस्था में लिए निर्णय और हुए अनुभव किसी भी व्यक्ति की मनोकामनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप होते हैं, तब मन अपने अवचेतन के प्रतिबंधक ढर्रों पर बार-बार वापस नहीं लौटता है, लेकिन यह रचनात्मक अवस्था सदा नहीं रहती। ज़ल्दी ही अवचेतन कमान पर लौट आता है। मन का अवचेतन भाग अगर नए सिरे से, नए भाव से, सकारात्मक आदतें चेतन हिस्से से सीख सके तो इस समस्या का समाधान निकल आए। ***(CBSE 2016)***

1. **जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है–**

(क) युवावस्था के अनुभवों का

(ख) जीवन के पहले सात सालों का

(ग) इतिहास और दर्शन का

(घ) माता-पिता की शिक्षाओं का।

2. **किसी व्यक्ति को जीवनभर अपना बनाने के लिए धर्म-प्रचारकों ने क्या सुझाव दिया–**

(क) बालक को छह-सात वर्ष की आयु तक धार्मिक गतिविधियों से जोड़कर रखना चाहिए

(ख) बालक को छह-सात वर्ष की आयु से ट्रेनिंग देनी चाहिए

(ग) बालक को छह-सात वर्ष की आयु तक ही ट्रेनिंग देनी चाहिए

(घ) व्यक्ति को समाज से पूरी तरह अलग रहना चाहिए।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

**कथन** (A)–पहले सात साल में सिखाया गया ढर्रा व्यक्ति की जीवन-राह तय कर सकता है।

**कारण** (R)–कम उमर में विकसित अवचेतन मन का हमारे जीवन पर असर पड़ता है।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

4. **'प्रेम की मानसिक अवस्था' अवचेतन मन से आजादी का उदाहरण है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

(1) प्रेम में अभिभूत व्यक्ति का स्वास्थ्य कुछ अलग चमकता हुआ दिखता है।

(2) उस व्यक्ति में अलग ऊर्जा दिखती है।

(3) वह व्यक्ति आलसी हो जाता है।

(क) (1) सही है (ख) (2) सही है

(ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. **हमें नकारात्मक प्रतिबंधक ढर्रों से बचने के लिए क्या करना चाहिए–**

(क) रचनात्मकता का विकास करना चाहिए

(ख) डॉक्टरी सलाह लेनी चाहिए

(ग) सभी निर्णय सोच-समझकर लेने चाहिए

(घ) चेतन और अवचेतन के अंतर को समझना चाहिए।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

**(13)** गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है, पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनंदपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनंद में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनंद का उन्मेष होता रहता है–यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुःख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा। जो उसे जीवनभर यह सोच-सोचकर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म में आनंद का अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है, वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है। ***(CBSE 2017)***

1. **कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता, क्योंकि–**

(क) अंतिम फल पहुँच से दूर होता है

(ख) प्रयत्न न करने का भी पश्चात्ताप नहीं होता

(ग) वह आनंदपूर्वक काम करता रहता है

(घ) असका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है।

2. **घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है–**

(क) पारिवारिक कष्ट बताने के लिए

(ख) नया उपचार बताने के लिए

(ग) शोक और दुःख की अवस्था के लिए

(घ) सेवा के संतोष के लिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

**कथन** (A)–कर्म में आनंद का अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है।

**कारण** (R)–कर्मण्य को कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'अत्याचार का दमन-शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में तुष्टि होती है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

(1) वह तुष्टि कर्मवीर का कर्म है।

(2) वह तुष्टि लोकोपकारी कर्मवीर का सुख है।

(3) वह कर्मवीर का कर्म-फल है।

(क) (1) सही है (ख) (2) सही है

(ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. **गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है–**

(क) कर्म करें तो फल मिलेगा

(ख) कर्म की बात करना सरल है

(ग) कर्म करने से संतोष होता है

(घ) कर्म करें फल की चिंता नहीं।

**उत्तर**– **1.** (घ) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (घ)।

**(14)** हरियाणा के पुरातत्त्व-विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुककर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबा नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा।

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज़्यादा है। एक ऐसा बरतन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बरतन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फ़र्नेस' के अवशेष भी मिले हैं।

मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का ख़तरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्त्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की दिलचस्पी और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत-से काम बकाया हैं; जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

***(CBSE 2017)***

1. **अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की संभावनाएँ हैं–**

(क) मोहनजोदड़ो (ख) राखीगढ़ी

(ग) हड़प्पा (घ) कालीबंगा।

2. **चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि–**

(क) यातायात के साधन थे (ख) अधिक आबादी थी

(ग) शहर नियोजित था (घ) बड़ा शहर था।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

**कथन** (A)–राखीगढ़ी को एशिया के विरासत-स्थलों की सूची में शामिल किया गया है।

**कारण** (R)–इसके नष्ट हो जाने का खतरा है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'राखीगढ़ी पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की रुचि और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

(1) यह काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है।

(2) यहाँ बहुत-से काम बकाया हैं।

(3) इसके बारे में अभी-अभी पता चला है।

(क) (1) सही है (ख) (2) सही है

(ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।

5. **उपयुक्त शीर्षक होगा–**

(क) राखीगढ़ी–एक सभ्यता की संभावना

(ख) सिंधु-घाटी सभ्यता

(ग) विलुप्त सरस्वती की तलाश

(घ) एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी।

**उत्तर** – **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क)।

**(15)** लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति अभी ख़र्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है, लेकिन उसे नींद से झकझोरकर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान् बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग, लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी ज़िम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं, फौलाद के कारख़ाने खोले हैं आदि-आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं, पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँववाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात ज़रूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ सिंचाई की ज़रूरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं। *(CBSE 2017)*

1. **लोकतंत्र का मूलभूत तत्त्व है–**
   (क) कर्तव्यपालन (ख) लोगों का राज्य
   (ग) चुनाव (घ) जनमत।
2. **किसी देश की महानता निर्भर करती है–**
   (क) वहाँ की सरकार पर (ख) वहाँ के निवासियों पर
   (ग) वहाँ के इतिहास पर (घ) वहाँ की पूँजी पर।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हुआ है।
   **कारण (R)**–फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति सो रही है और पूँजी बोझ बन गई है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **'सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं।
   (2) विशाल बाँध बनवाए हैं।
   (3) फौलाद के कारखाने खोले हैं।
   (क) (1) सही है
   (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है
   (घ) (1), (2) व (3) तीनों सही हैं।
5. **'झकझोरकर जाग्रत करना' का भाव गद्यांश के अनुसार होगा–**
   (क) नींद से जगाना
   (ख) सोने न देना
   (ग) ज़िम्मेदारी निभाना
   (घ) ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत करना।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (घ)।

**(16)** देश की आज़ादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके हैं और आज ज़रूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतीयों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे हैं, लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया, क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है।

एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही ज़रूरी नहीं, बल्कि लोग देखें और समझें भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए, इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं, पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनैतिक प्रणाली के बावज़ूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की ज़िम्मेदारी राजनैतिक नहीं बल्कि सामाजिक है।

आज़ादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। सारी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा, जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता। *(CBSE 2017)*

1. **लगभग 70 वर्ष की आज़ादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ हैं कि वे–**
   (क) समझदार हों
   (ख) प्रश्न करने वाले हों
   (ग) जगी हुई युवा पीढ़ी के हों
   (घ) मज़बूत सरकार चाहने वाले हों।
2. **हमारे लोकतांत्रिक देश में अभाव है–**
   (क) सौहार्द का (ख) सद्भावना का
   (ग) ज़िम्मेदार नागरिकों का (घ) एकमत पार्टी का।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–हमारा लोकतंत्र बेहतर नहीं बन पाया है।
   **कारण (R)**–नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे हैं।
   (क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) मंत्री को ईमानदार होना चाहिए।
   (2) उसे भ्रष्ट न बनाया जा सके।
   (3) वह त्यागी होना चाहिए।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही हैं (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **लोकतंत्र की भावना को जगाना-बढ़ाना दायित्व है–**
   (क) राजनैतिक (ख) प्रशासनिक
   (ग) सामाजिक (घ) संवैधानिक।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

**(17)** महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था–मैं बुराई करने वालों को सज़ा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना, इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है। आपके असहयोग का उद्देश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। 'अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने ज़िम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी ज़ल्दी दूर हो जाती है, लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ , जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेकयुक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता। यह सुधारने वाला प्रेम है।' *(CBSE 2018)*

1. **गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते थे–**
   (क) डाँट-फटकारकर (ख) लालच देकर
   (ग) प्यार, धैर्य और नम्रता से (घ) डराकर।
2. **बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है–**
   (क) बुरे को समाप्त करके (ख) अच्छाई को ग्रहण करके
   (ग) बुराई से सहयोग करके (घ) बुराई से असहयोग करके।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है।
   **कारण** (R)–असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'गाँधीजी के अनुसार प्रेम वह हैं'–उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) जो विवेक और बुद्धि से युक्त है।
   (2) जो सुधार करने वाला है।
   (3) जो मोहांध कर देता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।
5. **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–**
   (क) गांधीजी का प्रेम (ख) गांधीजी का सत्याग्रह
   (ग) बुराई का विनाश (घ) सच्चा प्रेम।

**उत्तर**– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

**(18)** मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है, आत्मनिर्भरता तथा सबसे बड़ा अवगुण है, स्वावलंबन का अभाव। स्वावलंबन सबके लिए अनिवार्य है। जीवन के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं। यदि उनके कारण हम निराश हो जाएँ, संघर्ष से जी चुराएँ या मेहनत से दूर रहें तो भला हम जीवन में सफल कैसे होंगे? अतः आवश्यक है कि हम स्वावलंबी बनें तथा अपने आत्मविश्वास को जाग्रत करके मज़बूत बनें। यदि व्यक्ति स्वयं में आत्मविश्वास जाग्रत कर ले तो दुनिया में ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसे वह न कर सके। स्वयं में विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में कामयाब होता जाता है। सफलता स्वावलंबी मनुष्य के पैर छूती है। आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता से आत्मबल मिलता है, जिससे आत्मा का विकास होता है तथा मनुष्य श्रेष्ठ कार्यों की ओर प्रवृत्त होता है। स्वावलंबन मानव में गुणों की प्रतिष्ठा करता है। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्मरक्षा, साहस, संतोष, धैर्य आदि गुण स्वावलंबन के सहोदर हैं। स्वावलंबन व्यक्ति, राष्ट्र तथा मानव मात्र के जीवन में सर्वांगीण सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। *(CBSE 2020)*

1. **जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए कौन-सा गुण आवश्यक है–**
   (क) स्वावलंबन (ख) वीरता
   (ग) धीरता (घ) परोपकार।
2. **आत्मविश्वास कैसे जाग्रत होता है–**
   (क) शक्ति से (ख) स्वावलंबन से
   (ग) धन से (घ) अशिक्षा से।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–हम स्वावलंबी बनें तथा आत्मविश्वास को जाग्रत करके मज़बूत बनें।
   **कारण** (R)–आत्मविश्वासी के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है।
   (क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **'आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता से आत्मबल मिलता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) इससे आत्मा का विकास होता है।
   (2) मनुष्य श्रेष्ठ कार्यों में प्रवृत्त होता है।
   (3) मनुष्य धनार्जन करता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही हैं (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–**
   (क) धैर्य (ख) साहस
   (ग) आत्मनिर्भरता (घ) सफलता।

**उत्तर**– **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

**(19)** अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, बाल-श्रम को इस प्रकार परिभाषित किया गया है–"वह काम जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी क्षमता और उनकी गरिमा से वंचित करता है, और जो शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हानिकारक है।"

एक सामाजिक बुराई के रूप में संदर्भित, भारत में बाल-श्रम एक अनिवार्य मुद्दा है, जिससे देश वर्षों से निपट रहा है। लोगों का मानना है कि बाल-श्रम जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त करने का दायित्व सिर्फ सरकार का है यदि सरकार चाहे तो कानून का पालन न करने वालों एवं कानून भंग करने वालों को सजा देकर बाल-श्रम को समाप्त कर सकती है किंतु वास्तव में ये केवल सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसे सभी सामाजिक संगठनों, मालिकों और अभिभावकों द्वारा भी समाधित करना चाहिए।

हमारे घरों में, ढाबों में, होटलों में, खानों में, कारखानों में अनेक बाल-श्रमिक मिल जाएँगे, जो कड़ाके की ठंड और तपती धूप की परवाह किए बिना काम करते हैं। विकासशील देशों में गरीबी और उच्च स्तर की बेरोज़गारी बाल-श्रम का मुख्य कारण है। बाल मज़दूरी इंसानियत के लिए अपराध है, जो समाज के लिए शाप बनती जा रही है तथा जो देश की वृद्धि और विकास में बाधक के रूप में बड़ा मुद्दा है। हमें सोचना होगा कि सभ्य समाज में यह अभिशाप क्यों मौजूद है? जिस उम्र में बच्चों को सही शिक्षा मिलनी चाहिए, खेलकूद के माध्यम से अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहिए, उस उम्र में बच्चों से काम करवाने से बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विकास रुक जाता है। शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार होता है। शिक्षा से किसी भी बच्चे को वंचित रखना अपराध माना जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकारी स्तर से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक सभी लोग इसके प्रति सजग रहें और बाल-श्रम के कारण बच्चों का बचपन न छिन जाए, इसके लिए कुछ सार्थक पहल करें। आम आदमी को भी बाल मज़दूरी के विषय में जागरूक होना चाहिए और अपने समाज में इसे होने से रोकना चाहिए। बाल-श्रम को खत्म करना केवल सरकार का ही कर्तव्य नहीं है, हमारा भी कर्तव्य है कि हम इस अभियान में सरकार का पूरा साथ दें।

*(CBSE SQP 2021)*

1. **गद्यांश के आधार पर बताइए कि बाल-श्रम जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त करने के लिए लोगों की सोच कैसी है–**
   (क) बाल-श्रम को समाप्त करना केवल समाजसेवी संस्थाओं का दायित्व है
   (ख) बाल-श्रम को समाप्त करना केवल जनता का दायित्व है
   (ग) बाल-श्रम को समाप्त करना केवल सरकार का दायित्व है
   (घ) बाल-श्रम को समाप्त करना केवल अभिभावकों का दायित्व है।
2. **घरों में, ढाबों में, होटलों में, खानों में, कारखानों में अनेक बाल-श्रमिकों को काम करता देखकर भी हम उदासीन क्यों बने रहते हैं–**
   (क) हम सिर्फ़ अपने बारे में ही सोचते हैं
   (ख) हम जागरूक बनना नहीं चाहते
   (ग) हम उनकी सहायता करना नहीं चाहते
   (घ) हम संवेदना शून्य हो चुके हैं।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार होता है।
   **कारण** (R)–शिक्षा से किसी बच्चे को वंचित रखना अपराध नहीं माना जाता है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **'बाल मज़दूरी इनसानियत के लिए अपराध है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) यह देश की वृद्धि और विकास में सबसे बड़ी बाधक है।
   (2) यह सभ्य समाज में अभिशाप है।
   (3) यह एक राजनैतिक मुद्दा है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।
5. **बाल-श्रम जैसे सामाजिक अभिशाप से देश को क्या नुकसान होता है–**
   (क) बाल-श्रम एक बच्चे को बचपन के सभी लाभों से दूर रखता है
   (ख) लाखों बच्चे उचित शिक्षा से वंचित हो जाते हैं
   (ग) बच्चों का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है
   (घ) बाल-श्रम से देश का आने वाला कल अंधकार की ओर जाने लगता है।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

**(20)** निःसंदेह सहजता से हर एक दिन भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ जीते हुए, महिलाएँ किसी भी समाज का स्तंभ हैं। लेकिन आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज उनकी भूमिका को नज़रअंदाज़ करता है। इसके चलते महिलाओं को बड़े पैमाने पर असमानता, उत्पीड़न, वित्तीय निर्भरता और अन्य सामाजिक बुराइयों का खामियाजा सहन करना पड़ता है। भारत में महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता के बहुत-से कारण सामने आते हैं। प्राचीनकाल की अपेक्षा मध्यकाल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफ़ी कमी आई। जितना सम्मान उन्हें प्राचीनकाल में दिया जाता था, मध्यकाल में वह सम्मान घटने लगा था। आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण महिलाएँ सदियों से घर तथा खेतों में पुरुषों के बराबर ही काम करती आई हैं, लेकिन वहाँ उन्हें सामंती सोच के कारण दूसरे दर्जे का नागरिक ही माना जाता रहा है। अब ग्रामीण समाज की सोच बदलने का वक्त आ गया है। सामाजिक असमानता, पारिवारिक हिंसा, अत्याचार और आर्थिक अनिर्भरता इन सभी से महिलाओं को छुटकारा पाना है तो ज़रूरत है महिला सशक्तीकरण की।

महिला सशक्तीकरण से महिलाएँ आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनती हैं। जिससे वे अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अपना स्थान बनाती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तीकरण है। महिला सशक्तीकरण का अर्थ है–महिलाओं को राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्रों में बराबर का भागीदार बनाया जाए। भारतीय महिलाओं का सशक्तीकरण बहुत हद तक भौगोलिक (शहरी और ग्रामीण), शैक्षणिक योग्यता और सामाजिक एकता के ऊपर निर्भर करता है।

महिला सशक्तीकरण में महिलाएँ केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ ही नहीं हुई हैं, अपितु परिवार और समाज की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। वर्तमान समय में लोग बेटियों को बोझ समझकर दुनिया में आने से पहले ही मारें नहीं, इसलिए विकास की मुख्यधारा में महिलाओं को लाने के लिए भारत सरकार के द्वारा कई योजनाएँ चलाई गई हैं। *(CBSE SQP 2021)*

1. **गद्यांश के आधार पर बताइए कि महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता क्यों महसूस की गई–**
   (क) समाज में महिलाओं की स्थिति निर्बल थी
   (ख) वे आत्मनिर्भर थीं
   (ग) वे अपने निर्णय लेने में सक्षम थीं
   (घ) वे शिक्षित थीं।
2. **ग्रामीण सोच में परिवर्तन लाने के लिए क्या किया जा सकता है–**
   (क) गाँवों में सुविधाएँ उपलब्ध कराना
   (ख) सड़कें बनवाना
   (ग) अंधविश्वास और रूढ़ियों का विरोध
   (घ) शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–परिवार और समाज की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं।
   **कारण** (R)–अब लोग बेटियों को बोझ समझकर जन्म से पहले ही मारते नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज नारी की भूमिका को नज़रअंदाज़ करता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
(1) इसके कारण महिलाओं को उत्पीड़न, असमानता जैसी बुराइयों को सहना पड़ता है।
(2) आर्थिक रूप से मजबूत रहना पड़ता है।
(3) एकाकी जीवन जीना पड़ता है।
(क) (1) सही है (ख) (2) सही है
(ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. **क्या महिलाओं के सशक्तीकरण का पक्ष मात्र आर्थिक रूप से सशक्त होना ही है–**
(क) हाँ, इससे वे आत्मनिर्भर हो जाती हैं
(ख) नहीं, इससे उन्हें दोहरी ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं
(ग) हाँ, इससे वे शक्तिशाली बनती हैं
(घ) नहीं, उनका भय-मुक्त, प्रतिबंधों से मुक्त होना भी आवश्यक है।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (घ)।

**(21)** बहुत-से विद्वानों और चिंतकों ने इस बात को लेकर चिंता प्रकट की है कि भारतीय समाज आधुनिकता से बहुत दूर है और भारत के लोग अपने आप को आधुनिक बनाने की कोशिश भी नहीं कर रहे हैं।
नैतिकता, सौंदर्यबोध और अध्यात्म के समान आधुनिकता कोई शाश्वत मूल्य नही है। वह कई चीजों का एक सम्मिलित नाम है। औद्योगीकरण आधुनिकता की पहचान है। साक्षरता का सर्वव्यापी प्रसार आधुनिकता की सूचना देता है। नगर-सभ्यता का प्राधान्य आधुनिकता का गुण है। सीधी-सादी अर्थव्यवस्था मध्यकालीनता का लक्षण है। आधुनिक देश वह है, जिसकी अर्थव्यवस्था जटिल और प्रसरणशील हो और जो 'टेक-ऑफ' की स्थिति को पार कर चुकी हो।
आधुनिक समाज मुक्त और मध्यकालीन समाज बंद होता है। बंद समाज वह है, जो अन्य समाजों से प्रभाव ग्रहण नहीं करता, जो अपने सदस्यों को भी धन या संस्कृति की दीर्घा में ऊपर उठने की खुली छूट नहीं देता, जो जाति-प्रथा और गोत्रवाद से पीड़ित है, जो अंधविश्वासी, गतानुगतिक और संकीर्ण है।
आधुनिक समाज में उन्मुक्तता होती है। उस समाज के लोग अन्य समाजों के लोगों से मिलने-जुलने में नही घबराते, न वे उन्नति का मार्ग खास जातियों और खास गोत्रों के लिए सीमित रखते हैं।
आधुनिक समाज सामरिक दृष्टि से भी बलवान समाज होता है। जो देश अपनी रक्षा के लिए भी लड़ने में असमर्थ है, उसे आधुनिक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। आधुनिक समाज के लोग आलसी और निकम्मे नहीं होते। आधुनिक समाज का एक लक्षण यह भी है कि उसकी हर आदमी के पीछे होने वाली आय अधिक होती है, उसके हर आदमी के पास कोई धंधा या काम होता है और अवकाश की शिकायत प्रायः हर एक को रहती है।
*[CBSE 2021 Term-1]*

1. **गद्यांश के आधार पर सही तथ्य को चुनिए–**
(क) आधुनिक समाज मुक्त तथा मध्यकालीन समाज खुला होता है
(ख) आधुनिक समाज बंद तथा मध्यकालीन समाज मुक्त होता है
(ग) आधुनिक समाज मुक्त तथा मध्यकालीन समाज बंद होता है
(घ) आधुनिक समाज उन्मुक्त तथा मध्यकालीन समाज जड़ होता है।

2. **शाश्वत मूल्यों में शामिल हैं–**
(क) नैतिकता, सौंदर्यबोध और अध्यात्म
(ख) नैतिकता, सौंदर्यबोध और आधुनिकता
(ग) नैतिकता, अध्यात्म और आधुनिकता
(घ) सौंदर्यबोध, अध्यात्म और आधुनिकता।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
**कथन (A)**–विद्वानों को खुशी है कि भारत आधुनिकता के बहुत निकट है।
**कारण (R)**–भारत के लोग स्वयं को आधुनिक बनाने की कोशिश कर रहे हैं।
(क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

4. **आधुनिक समाज की विशिष्टताओं में शामिल हैं–**
(i) उन्मुक्तता
(ii) सामरिक बल
(iii) आलस्य
**उपरोक्त विकल्पों के आधार पर निम्नलिखित विकल्पों में सही विकल्प का चयन कीजिए–**
(क) (i), (ii) और (iii) तीनों (ख) (i) और (iii)
(ग) (ii) और (iii) (घ) (ii) और (i)।

5. **एक बंद समाज की विशेषताओं में किसे नहीं रखा जाएगा–**
(क) अन्य समाजों से प्रभाव ग्रहण नहीं करना
(ख) जाति-प्रथा और गोत्रवाद से पीड़ित रहना
(ग) धन या संस्कृति के क्षेत्र में खुली छूट देना
(घ) अंधविश्वासी, पिछड़ा और संकीर्ण होना।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

**(22)** बंगाल की शस्य-श्यामला धरती का सौंदर्य अविस्मरणीय है। इसके मनोहर और उन्मुक्त सौंदर्य को प्रतिभाशाली रचनाकार अपने गीतों, निबंधों और कविताओं में बांधने की कोशिश करते रहते हैं, लेकिन इसके मायावी और लोकोत्तर आकर्षण का रंच मात्रा ही वे रूपायित करने में सफल हो पाए हैं। अविभाजित बंगाल का सौंदर्य किसी भी संवेदनशील मस्तिष्क के भीतर हलचल पैदा कर सकता है। चाँदी सी चमकती मीलों लंबी नहरों और नदियों के बीच पन्नों की तरह चमकते हरे-भरे खेतों के चित्र संवेदनशील मन को अपूर्व आनंद से भर देते हैं। हरे-भरे खेतों में पके दानों की लहलहाती सुनहरी फसल, हवा में फुसफुसाते लंबे ताड़ के वृक्ष और साल की पत्तियों की बहती हुई मंद-मंद हवा, कंचनजंघा के उत्तुंग शिखर, सुंदरवन के घने जंगल, दीघा के सुंदर रेतीले समुद्र तट और उत्तर बंगाल के हरे-भरे चाय के बागान आँखों में रचे-बसे रहते हैं। प्राकृतिक छटाओं से भरी-पूरी यह धरती युगों से महान लेखकों, कवियों और कलाकारों को प्रेरित करती रही है। इस अनोखे वरदान के केवल

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वही पात्र हैं। जिन्हें हम धरती पर पैदा होने का सौभाग्य मिला है अथवा वे हैं जो अविभाजित बंगाल में रह चुके हैं।

*[CBSE 2021 Term-1]*

1. **किसी संवेदनशील मन को अपूर्व आनंद से भर देते हैं–**
   (क) नदियों, नहरों और खेतों के चित्र
   (ख) नदियों, समुद्रों और हीरे-पन्ने के दृश्य
   (ग) चाँदी की चमक और पन्नों की हरियाली
   (घ) फसलों और पेड़ों के मिले-जुले दृश्य।
2. **'अविभाजित बंगाल का सौंदर्य संवेदनशील मस्तिष्क में हलचल पैदा कर सकता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) चाँदी-सी चमकती नहरों और नदियों के बीच पन्नों की तरह चमकते हरे खेत।
   (2) लहलहाती सुनहरी फसलें।
   (3) कंचनजंघा के उत्तुंग शिखर।
   (क) (1) सही है
   (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है
   (घ) (1), (2) व (3) तीनों सही हैं।
3. **निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गद्यांश के आधार पर सही हैं–**
   (क) फसल : धनी (ख) समुद्र तट : रेतीले
   (ग) कंचनजंघा : मंद हवा (घ) चाय बागान : सुनहरे।
4. **बंगाल की भूमि के विषय में कथन और कारण की सत्यता परखिए–**
   **कथन : यह धरती युगों से महान लेखकों, कवियों और कलाकारों को प्रेरित करती रही है।**
   **कारण : यह धरती युगों से प्राकृतिक छटाओं से भरपूर है।**
   (क) कथन और कारण दोनों असत्य है
   (ख) कथन और कारण दोनों सत्य हैं
   (ग) कथन सत्य पर कारण असत्य है
   (घ) कथन असत्य है पर कारण सत्य है।
5. **इस गद्यांश का केंद्रीय-विषय है–**
   (क) बंगाल के जादू को बताना
   (ख) अविभाजित बंगाल की धरती का सौंदर्य
   (ग) बंगाल में बिताए दिनों की याद
   (घ) प्रकृति का मनुष्य के ऊपर पड़ने वाला प्रभाव।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ख)।

**(23)** वैज्ञानिकों का मानना है कि दुनियाभर में बढ़ते पर्यावरण संकट को कम करने में जैविक खेती एक उपचारक भूमिका निभा सकती है। गौरतलब है कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में प्राकृतिक खेती बड़े पैमाने पर अपनाई जा रही है। धीरे-धीरे दक्षिण, मध्य भारत और उत्तर भारत में भी यह किसानों में लोकप्रिय हो रही है। अब किसानों ने जैविक खेती को एक सशक्त विकल्प के रूप में अपना लिया है। गौरतलब है कि जैविक या प्राकृतिक खेती की तरफ भारतीय किसानों का रूझान लगातार बढ़ रहा है। धीरे-धीरे जैविक खेती का प्रचलन बढ़ रहा है। जैविक बीज, जैविक खाद, पानी, किसानी के यंत्रों आदि की आसानी से उपलब्धता जैविक खेती की लोकप्रियता को और अधिक बढ़ा सकती है।

प्राकृतिक खेती को लेकर अनुसंधान भी बहुत हो रहे हैं। किसान नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। इससे कृषि वैज्ञानिक भी प्राकृतिक खेती को लेकर अधिक उत्साहित हैं। कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि जैविक या प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने से पर्यावरण, खाद्यान्न, भूमि, इंसान की सेहत, पानी की शुद्धता को और बेहतर बनाने में मदद मिलती है। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के इस्तेमाल से होने वाली बीमारियों और समस्याओं की जानकारी न होने की वजह से किसान इनका प्रयोग काफी ज्यादा करने लगे हैं। वहीं दूसरी तरफ सिक्किम में प्राकृतिक खेती से पर्यावरण को जितनी मदद मिली है उससे साफ़ हो गया है कि प्राकृतिक खेती को अपनाकार कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। *(CBSE 2023)*

1. **आज जैविक खेती की माँग क्यों बढ़ती जा रही है?**
   (क) सस्ती होने के कारण
   (ख) अधिक उत्पादन के कारण
   (ग) स्वच्छ पर्यावरण के कारण
   (घ) सरकारी मदद मिलने के कारण।
2. **सही कथन का चयन कीजिए–**
   (क) उत्तर भारत में जैविक खेती के लिए प्रेरणा की ज़रूरत है।
   (ख) पूर्वोत्तर राज्यों में जैविक खेती के प्रति अधिक उत्साह है।
   (ग) लोगों में प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी का अभाव है।
   (घ) प्राकृतिक खेती के लिए विश्वविद्यालय से शिक्षित होना जरूरी है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प लिखिए–**
   **कथन (A)**–जैविक खेती की तरफ़ भारतीय किसानों का रूझान बढ़ रहा है।
   **कारण (R)**–धीरे-धीरे जैविक खेती का प्रचलन बढ़ रहा है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'जैविक या प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के अनेक लाभ हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) खाद्यान्न और भूमि को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है।
   (2) मनुष्यों की सेहत और पानी की शुद्धता बनाए रखने में सहायता मिलती है।
   (3) प्राकृतिक सौंदर्य बढ़ाने में सहायता मिलती है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (1) व (2) सही हैं (घ) (3) सही है।
5. **किसान कीटनाशकों और रासायनिक खादों का अधिक प्रयोग क्यों करने लगे हैं?**
   (क) सहज उपलब्धता के कारण
   (ख) दुष्प्रभावों की जानकारी न होने के कारण
   (ग) अधिक प्रचार-प्रसार के कारण
   (घ) सस्ती होने के कारण।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

**(24)** एशिया के उच्च पर्वतीय क्षेत्र को सेंट्रल एशियन माउंटेन रीजन भी कहा जाता है। इसमें हिमालयन, कराकोरम और हिंदुकुश पर्वत श्रृंखलाएँ आती हैं जो चीन से लेकर अफगानिस्तान तक फैली हैं। इस क्षेत्र में करीब 55 हजार हिमनद हैं, जिनमें पेयजल का जितना भंडार है उतना उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के अतिरिक्त पृथ्वी पर एक साथ पेयजल कहीं नहीं है। इन हिमनदों से पिघला हुआ जल एशिया की दस सबसे बड़ी नदियों को जीवन देता है, जिन पर करीब दो करोड़ लोगों की आबादी निर्भर रहती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बढ़ते तापमान की वजह से इन सभी पर खतरा मंडरा रहा है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यानी यूएनडीपी के मुताबिक शेष दुनिया के मुकाबले हिमालयी क्षेत्र में तापमान करीब दोगुनी रफ्तार से बढ़ रहा है, जिसकी वजह से पर्वतों पर जमी बर्फ पिघल रही है और बर्फबारी हो रही है। यदि समय रहते वैश्विक तापमान में लगभग 1.5 फीसदी की कमी नहीं की गई तो इस शताब्दी के अन्त तक दक्षिण एशिया के पहाड़ों पर जो बर्फ जमा है, उसका आधा या फिर दो-तिहाई हिस्सा गायब हो जाएगा।

पिघलते हिमनदों की वजह से बिजली आपूर्ति भी प्रभावित हो रही है। पिछले साल भारत ने गंगा नदी पर नए पनबिजली संयंत्रों के निर्माण पर रोक लगा दी थी, ताकि निचले इलाकों में नदियों के पानी के बहाव को बनाए रखा जा सके और नदियाँ सूखने न पाएँ। ग्लेशियरों के पिघलने की दर को कम करने के तरीके ढूँढने के बावजूद तमाम वैज्ञानिक भविष्य को लेकर बहुत चिंतित हैं। जीवाश्म ईंधनों के जरिए लोग उन गैसों को वायुमंडल में छोड़ते हैं, जो पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस की तरह काम करती हैं और धरती गर्म होने लगती है। कोयला, तेल और गैस जलने पर कालिख और पार्टिकुलेट मेटर छोड़ते हैं। हवा के जरिए ये प्रदूषक बर्फ पर जम जाते हैं और बर्फ तेजी से गर्म होकर पिघलने लगती है। ***(CBSE 2023)***

1. **सेंटल एशियन माउंटेन रीजन कहाँ है?**
   (क) ऑस्ट्रेलिया में (ख) अफ्रीका में
   (ग) साउथ अमेरिका में (घ) एशिया में।
2. **विश्व में सर्वाधिक पीने योग्य जल का भंडार कहाँ उपलब्ध है?**
   (क) नदियों में (ख) दोनों ध्रुवों पर
   (ग) हिमालय पर (घ) हिंदुकुश पर्वत पर।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–जीवनदायिनी नदियों पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं।
   **कारण (R)**–तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'गंगा नदी पर नए पनबिजली संयंत्रों के निर्माण पर प्रतिबंध लगाना पड़ा है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) नदियों के बहाव को बनाए रखा जा सके।
   (2) नदियाँ प्रदूषित न हों।
   (3) बाढ़ को रोका जा सके।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है (घ) (1) व (3) सही हैं।
5. **गद्यांश के आधार पर ग्लेशियरों को पिघलने से कैसे रोका जा सकता है?**
   (क) जल प्रदूषण में कमी लाकर
   (ख) जीवाश्म ईंधनों का सीमित प्रयोग कर
   (ग) प्लास्टिक पर रोक लगाकर
   (घ) विकास कार्यों पर लगाम लगाकर।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

**(25)** हमारे देश में हिंदी फिल्मों के गीत अपने आरंभ से ही आम दर्शक के सुख-दुख के साथी रहे हैं। वर्तमान समय में हिंदी फिल्मों के गीतों ने आम जन के हृदय में लोकगीतों सी आत्मीय जगह बना ली है। जिस तरह से एक जमाने में लोकगीत जनमानस के सुख-दुख, आकांक्षा, उल्लास और उम्मीद को स्वर देते थे, आज फिल्मी गीत उसी भूमिका को निभा रहे हैं। इतना ही नहीं देश की विविधता को एकता के सूत्र में बाँधने में हिंदी फिल्मों का योगदान सभी स्वीकार करते हैं। हिंदी भाषा की शब्द संपदा को समृद्ध करने का जो काम राजभाषा विभाग तत्सम शब्दों की सहायता से कर रहा है। वही कार्य फ़िल्मी गीत और डायलॉग लिखने वाले विविध क्षेत्रीय भाषाओं के मेल से करते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। यह गाने जन-जन के गीत इसी कारण बन सके क्योंकि इनमें राजनीति के उतार-चढ़ाव की अनुगूंजों के साथ देहाती कस्बायी और नए बने शहरों का देशज जीवन दर्शन भी आत्मसात किया जाता रहा है। भारत की जिस गंगा-जमुनी संस्कृति का महिमामंडन बहुधा होता है उसकी गूंज भी इन गीतों में मिलती है। आजादी की लड़ाई के दौरान लिखे प्रदीप के गीत हों या स्वाधीनता प्राप्ति साथ ही होनेवाले देश के विभाजन की विभीषिका, सभी को भी इन गीतों में बहुत संवेदनशील रूप से व्यक्त किया गया है।

हिंदी फ़िल्मी गीतों के इस संसार में हिंदी-उर्दू का 'झगड़ा' भी कभी पनप नहीं सका। प्रदीप, नीरज जैसे शानदार हिंदी कवियों, इंदीवर तथा शैलेंद्र जैसे श्रेष्ठ गीतकारों और साहिर, कैफ़ी, मजरूह जैसे मशहूर शायरों को हिंदी सिनेमा में हमेशा एक ही बिरादरी का माना जाता रहा है। यह सिनेमा की इस दुनिया की ही खासियत है कि एक तरफ गीतकार साहिर ने 'कहाँ हैं कहाँ हैं/मुहाफिज खुदी के/ जिन्हें नाज है हिंद पर/ वो कहाँ हैं' लिखा तो दूसरी तरफ उन्होंने ही 'संसार से भागे फिरते हो/ भगवान को तुम क्या पाओगे!/ ये भोग भी एक तपस्या है/ तुम प्यार के मारे क्या जानोगे/ अपमान रचयिता का होगा/ रचना को अगर ठुकरा ओगे!' जैसी पंक्तियाँ भी रची हैं। परवर्तियों में गुलजार ऐसे गीतकार हैं जिन्होंने उर्दू, हिंदी, पंजाबी, राजस्थानी के साथ पुरबिया बोलियों में मन को मोह लेने वाले गीतों की रचना की है। बंदिनी के 'मोरा गोरा अंग लइले, मोहे श्याम रंग दइदे', कजरारे-कजरारे तेरे कारे-कारे नयना!', 'यारा सिली सिली रात का ढलना' और 'चप्पा-चप्पा चरखा चले' जैसे गीतों को रचकर उन्होंने भारत की साझा संस्कृति को मूर्तिमान कर दिया है। वस्तुतः भारत में बनने वाली फिल्मों में आने वाले गीत उसे विश्व-सिनेमा में एक अलग पहचान देते हैं। ये गीत सही मायने में भारतीय संस्कृति की खूबसूरती को अभिव्यक्त करते हैं। ***(CBSE SQP 2023-24)***

1. **हिंदी फिल्मी गीतों और लोकगीतों में क्या समानता है?**
   (क) ये लोगों के रीति-रिवाजों, उनकी लालसाओं उनकी सोच और कल्पनाओं को स्वर देते हैं।
   (ख) ये लोगों के जीवन के अनुभवों, आमोद-प्रमोद, विचारों और दर्शन को स्वर देते हैं।
   (ग) ये लोगों के आनंद उनके शोक, उनके हर्ष और उनकी आशाओं को स्वर देते हैं।
   (घ) ये लोगों के जीवन के यथार्थ और कठोरताओं में जिंदा रहने की चाह को स्वर देते हैं।
2. **हिंदी भाषा की शब्द संपदा को समृद्ध करने का काम फिल्मी गीतों ने किस प्रकार किया?**
   (क) राजभाषा विभाग से प्रेरणा पाकर
   (ख) विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के मेल से
   (ग) क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों को प्रोत्साहित करके
   (घ) विदेशी भाषाओं की फिल्मों को हतोत्साहित करके।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–हिंदी फिल्मों के गाने जन-जन के गीत बन गए हैं।

**कारण (R)**–इन गीतों में राजनीति की अनुगूंजों के साथ, देहाती, कस्बायी और नए बने शहरों का जीवन दर्शन भी आत्मसात किया जाता रहा है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'हिंदी फिल्मी गीतों के इस संसार में हिंदी-उर्दू का 'झगड़ा' भी कभी पनप नहीं सका।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

(1) यहाँ सभी गीतकारों को एक ही बंधुत्व वर्ग का माना जाता है।
(2) ये गीतकार सभी भाषाओं में समान रूप से गीत लिखते हैं।
(3) इन गीतकारों में वैमनस्य व प्रतिस्पर्धा का भाव नहीं है।

(क) (1) सही है (ख) (2) सही है
(ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।

5. **उपर्युक्त गद्यांश में हिंदी फिल्मी गीतों की किस विशेषता पर सर्वाधिक बल दिया गया है?**

(क) ये गीत कलात्मक श्रेष्ठता व सर्वधर्म समभाव को अभिव्यक्त करते हैं।
(ख) ये गीत सांप्रदायिक सद्भाव को अभिव्यक्त करते हैं।
(ग) ये गीत पारस्परिक प्रेम व सद्भाव को अभिव्यक्त करते हैं।
(घ) ये गीत हमारी तहज़ीब की खूबसूरती को अभिव्यक्त करते हैं।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ)।

# अपठित काव्यांश

***निर्देश–निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–***

**(1)** प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ?
सात साल की बच्ची का पिता तो है।
सामने गीयर से ऊपर
हुक से लटका रखी हैं
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी।
बस की रफ़्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं,
झुककर मैंने पूछ लिया,
खा गया मानो झटका।
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रौबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला : हाँ सा 'ब'
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया।
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने।

1. **बस में काँच की चूड़ियाँ किसने लटका रखी थीं–**

(क) ड्राइवर ने (ख) मुनिया ने
(ग) ड्राइवर की पत्नी ने (घ) इनमें से किसी ने नहीं।

2. **बस में चूड़ियाँ टाँगने का उद्देश्य क्या था–**

(क) चूड़ियों को सुरक्षित रखना
(ख) बस की सजावट करना
(ग) हर समय अब्बा की स्मृति में बने रहना
(घ) यात्रियों को अपनी चूड़ियाँ दिखाना।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–मैंने झुककर पूछ लिया।

**कारण (R)**–मानो झटका खा गया।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

4. **'अपनी कीमती वस्तु अब्बा की आँखों के सामने टाँगी है।' निम्नलिखित किस पंक्ति का यह आशय है–**

(क) हुक से लटका रखी हैं
(ख) बस की रफ़्तार के मुताबिक
(ग) अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
(घ) काँच की चार गुलाबी चूड़ियाँ

5. **कविता में कौन-सा रस है–**

(क) वीर रस (ख) वत्सल रस
(ग) करुण रस (घ) शांत रस।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ख)।

**(2)** आदमी हो, स्नेहवाती बन नया दीपक जलाना।
दर्द की परछाइयों के दानवी बंधन हटाना।
छटपटाती ज़िंदगी को चेतना संगीत देना।
विश्व को नवपंथ देना; हारते को जीत देना।।
आदमी हो, बुझ रहे ईमान को विश्वास देना।
मुसकराकर वाटिका में मधुभरा मधुमास देना।
शूल के बदले जगत को फूल की सौगात देना।
जो पिछड़ता हो उसे नवशक्ति देना, साथ देना।।
आदमी हो, डूबते मँझधार में पतवार देना।
थक चला विश्वास साथी, आस्था आधार देना।
क्रांति का संदेश देकर राह युग की मोड़ देना।
फिर नया मानव बनाना; रूढ़ियों को तोड़ देना।।
आदमी हो, द्वेष के तूफ़ान को हँसकर मिटाना।
कंठ-भर विषपान करना; किंतु सबको प्यार देना।
मेटना मज़बूरियों को, दीन को आधार देना।
खाइयों को पाटना; बिछुड़े दिलों को जोड़ देना।।

1. **काव्यांश में शूल और फूल किसके प्रतीक हैं–**

(क) दुःख और सुख के (ख) साधु और संत के
(ग) गंदगी और सुंदरता के (घ) उत्थान और पतन के।

2. **कवि छटपटाती ज़िंदगी को क्या देने के लिए कहता है–**

(क) औषधि (ख) पानी
(ग) चेतना संगीत (घ) छाया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–दर्द की परछाइयों के दानवी बंधन हटाना।

**कारण (R)**–थक चला विश्वास साथी, आस्था आधार देना।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'तुम अपनी मुस्कान से संसार को मधुरता प्रदान करना।' निम्नलिखित किस पंक्ति का यह आशय है–**

(क) छटपटाती जिंदगी को चेतना संगीत देना।

(ख) मुसकराकर वाटिका में मधुभरा मधुमास देना।

(ग) शूल के बदले जगत को फूल की सौगात देना।

(घ) विश्व को नवपंथ देना, हारते को जीत देना।

5. **कवि रूढ़ियों को तोड़कर क्या बनाने के लिए कहता है–**

(क) नया मानव (ख) नया समाज

(ग) नया देश (घ) नई परंपराएँ।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (क)।

**(3)** ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?
मैं कठिन तूफ़ान कितने झेल आया,
मैं रुदन के पास हँस-हँस खेल आया।
मृत्यु-सागर-तीर पर पद-चिह्न रखकर–
मैं अमरता का नया संदेश लाया।
आज तू किसको डराना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?

शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं
हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।
तेज़ मेरी चाल आँधी क्या करेगी?
आग में मेरे मनोरथ तप चुके हैं।
आज तू किससे लिपटना चाहती है?

चाहता हूँ मैं कि नभ-थल को हिला दूँ,
और रस की धार सब जग को पिला दूँ,
चाहता हूँ पग प्रलय-गीत से मिलाकर–
आह की आवाज़ पर मैं आग रख दूँ।
आज तू किसको जलाना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?

1. **कवि क्या लेकर आया है–**

(क) नई कविताएँ (ख) नया संगीत

(ग) अमरता का नया संदेश (घ) शोक का संदेश।

2. **निराशा किसे डराना चाहती है–**

(क) साहसी कवि को (ख) मननशील पाठक को

(ग) निराश वीरों को (घ) भोले-भाले बच्चों को।

3. **कवि क्या चाहता है–**

(क) विश्व में प्रलय (ख) इच्छाओं की पूर्ति

(ग) संसार में क्रांति (घ) असीमित अधिकार।

4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं।

**कारण (R)**–हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

5. **'और रस की धार सब जग को पिला दूँ।'–पंक्ति का यह आशय है–**

(क) फलों का रस पिलाना

(ख) गन्ने का रस पिलाना

(ग) वीरता का संचार करना

(घ) प्रेम-रस का संचार करना।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(4)** जो नहीं हो सके पूर्ण काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि पार
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
–उनको प्रणाम!

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि,
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
–उनको प्रणाम!

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
–उनको प्रणाम!

थी उग्र साधना, पर जिनका
जीवन-नाटक दुःखांत हुआ;
था जन्मकाल में सिंह लग्न
पर कुसमय ही देहांत हुआ!
–उनको प्रणाम!

1. **कवि किन्हें प्रणाम कर रहा है–**

(क) जो काम में असफल हो गए हैं

(ख) जो जीवनभर दुःखी रहे हैं

(ग) जिनके पास सीमित साधन हैं

(घ) जो जीवन में सफल हो गए हैं।

2. **कविता में 'उच्च शिखर' किसका प्रतीक है–**

(क) पहाड़ की ऊँची चोटी का (ख) बहुत प्रिय वस्तु का

(ग) ऊँचे जीवन-लक्ष्य का (घ) पेड़ की चोटी का।

3. **'प्रत्युत फाँसी पर झूल गए।'– पंक्ति में किसकी ओर संकेत है–**

(क) असामाजिक तत्त्वों की ओर

(ख) देश के गद्दारों की ओर

(ग) देश के शहीदों की ओर

(घ) देश के अमीरों की ओर।

4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–उनकी साधना बड़ी उग्र थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कारण (R)–उनके जीवन का अंत दुखपूर्ण हुआ।
(क) कथन (A) व (R) सही हैं, और (A), (R) की सही व्याख्या है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कथन (A), (R) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

5. **'जीवन-नाटक' में अलंकार है–**
(क) उपमा (ख) यमक
(ग) रूपक (घ) अनुप्रास।

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)।

(5) चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
है कठिन कुछ भी नहीं जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।
संकटों से वीर घबराते नहीं आपदाएँ देख छिप जाते नहीं।
लग गए जिस काम में पूरा किया, काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।।
हो सरल या कठिन हो रास्ता, कर्मवीरों को न इससे वास्ता।
बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले, कठिनतर गिरिश्रृंग ऊपर चढ़ चले।।

1. **काव्यांश में किसका वर्णन है–**
(क) कर्मवीरों का (ख) आलसी व्यक्तियों का
(ग) वीर सैनिकों का (घ) किसानों का।

2. **चिलचिलाती धूप को चाँदनी बनाने का क्या अर्थ है–**
(क) दिन को रात कर देना
(ख) धूप को छाँव बना देना
(ग) कठिन कार्य को सरल बना देना
(घ) सुखद को दुखद बना देना।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–कर्मवीर संकटों से घबराते नहीं हैं।
**कारण** (R)–वे आपत्तियों को देखकर छिपते नहीं हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

4. **कर्मवीरों को किससे वास्ता नहीं–**
(क) रास्ता सरल हो या कठिन
(ख) काम अच्छा हो या बुरा
(ग) लाभ हो या हानि
(घ) सुख मिले या दुःख।

5. **काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–**
(क) किसान (ख) वीर सैनिक
(ग) कर्मवीर (घ) धर्मवीर।

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)।

(6) हरी-हरी वह घास उगाती है
फसलों को लहलहाती है
फूलों में भरती रंग
पेड़ों को पाल-पोसकर ऊँचा करती
पत्ते-पत्ते में रहे ज़िंदा हरापन
अपनी देह को खाद बनाती है
धरती-इसीलिए माँ कहलाती है।
पानी से सराबोर हैं सब
नदियाँ, पोखर, झरने और समंदर
ज्वालामुखी हज़ारों फिर भी
सोते धरती के अंदर!
जैसा सूरज तपता आसमान में
धरती के भीतर भी दहकता है
गोद में लेकिन सबको
साथ सुलाती है
धरती–इसीलिए माँ कहलाती है।
आग-पानी को सिखाती साथ रहना
हर बीज सीखता इस तरह उगना,
एक हाथ फसलें उगाकर
सबको खिलाती है
दूसरे हाथ सृजन का
सह-अस्तित्व का
एकता का पाठ पढ़ाती है
धरती–इसीलिए माँ कहलाती है।

1. **पत्तों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए धरती क्या करती है–**
(क) सूर्य से धूप लेती है
(ख) बादलों से वर्षा करवाती है
(ग) अपनी देह को खाद बनाती है
(घ) पेड़ों की सिंचाई करती है।

2. **धरती विरोधी भाव वालों को एक साथ रहना कैसे सिखाती है–**
(क) नदियाँ, पोखर आदि के द्वारा
(ख) ज्वालामुखी को ठंडा करके
(ग) सबको पाल-पोसकर
(घ) अपने अंदर परस्पर विरोधी पदार्थों का पोषण करके।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–धरती एकता का पाठ पढ़ाती है।
**कारण** (R)–इसीलिए धरती माँ कहलाती है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'धरती विपरीत स्वभाव वालों को साथ रहना सिखाती है।' निम्नलिखित किस पंक्ति का यह आशय है–**
(क) हरी-हरी घास उगाती है
(ख) अपनी देह को खाद बनाती है
(ग) आग-पानी को सिखाती साथ रहना
(घ) धरती इसीलिए माँ कहलाती है।

5. **काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–**
(क) हरी-भरी फसलें (ख) धरती माँ
(ग) धरती की सीख (घ) धरती की संपदा।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ख)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(7) कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन–
पाप-शाप सब शांत शमन कर, दर्प-द्वेष दुःख-दैन्य हवन कर
शांति-त्याग सत-सुंदर शिव की जले विश्व में जोत निरंतर
कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा हम करते अभिनंदन।
स्वर्ग बने मनुजों की संसृति और अखंडित हो यह संस्कृति,
सभी चढ़ें सोपान प्रगति के कहीं न हो जीवन की दुर्गति,
सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो ,कहीं न हो जन का दुःख-क्रंदन
कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन।

1. **कवि किसके विनाश की प्रार्थना कर रहा है–**
   (क) मद, मोह एवं लोभ के
   (ख) दर्प, द्वेष और दुःख-दैन्य के
   (ग) शांति और त्याग के
   (घ) क्रोध, आवेश और कपट के।
2. **कवि विश्व में किस ज्योति की कामना कर रहा है–**
   (क) ज्ञान और अध्यात्म की
   (ख) तमनाशिनी प्रभा की
   (ग) सत्यं, शिवं और सुंदरं की
   (घ) प्रेम और एकता की।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–मनुष्य को सबके सुख में सुखी रहना चाहिए।
   **कारण** (R)–कहीं भी दुख का क्रंदन नहीं होना चाहिए।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
4. **'सब उन्नति को प्राप्त करें।' यह भाव किस पंक्ति में है–**
   (क) सभी चढ़ें सोपान प्रगति के
   (ख) स्वर्ण बने मनुजों की संसृति
   (ग) सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो
   (घ) कहीं न हो जीवन की दुर्गति।
5. **'दर्प, द्वेष, दुःख-दैन्य हवन कर' में कौन-सा अलंकार है–**
   (क) उपमा (ख) अनुप्रास
   (ग) यमक (घ) श्लेष।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(8) धूप की तपन खुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेड़ों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हज़ारों मील चलकर
गई थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफ़ा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

1. **पेड़ों ने क्या प्रतिज्ञा ली है–**
   (क) सबको फल देने की
   (ख) हरा-भरा रहने की
   (ग) धूप की तपन खुद सहने की
   (घ) पक्षियों को आश्रय देने की।
2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–पेड़ों ने धूप की तपन सहने और सबको छाँव देने का प्रण लिया।
   **कारण** (R)–धूप ने फूलों को रंगीन और पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
   (क) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
3. **नदियाँ हज़ारों मील किसलिए चलती हैं–**
   (क) खेतों को सींचने के लिए
   (ख) रेगिस्तान को हरा-भरा करने के लिए
   (ग) समुद्र को अपना मीठा जल देने के लिए
   (घ) लोगों की प्यास बुझाने के लिए।
4. **समुद्र ने बादल के हाथ नदियों के लिए क्या भेजा–**
   (क) मीठे जल का तोहफ़ा (ख) मोतियों का उपहार
   (ग) अपना खारा पानी (घ) कुछ नहीं भेजा।
5. **इस कविता का क्या संदेश है–**
   (क) शठ के साथ शठता का व्यवहार करो
   (ख) उपकार का प्रत्युपकार अवश्य मिलता है
   (ग) अपकारी का अपकार करो
   (घ) जैसी कथनी वैसी करनी।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

(9) जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है–
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर परिधि में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर,
और अब केंद्रित हो
गया हूँ मात्र बिंदु में।
जब कभी अनेक फूलों पर,
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग है
और मधु-मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है।
किंतु अब

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बाग और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई हैं
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ।

1. **काव्यांश में 'स्व' शब्द का क्या अर्थ है–**
   (क) धन-संपत्ति  (ख) अपना-अपनापन
   (ग) शासन-प्रशासन  (घ) मान-स्वाभिमान।
2. **कवि के 'स्व' की सीमा कहाँ तक थी–**
   (क) अपने माता-पिता तक
   (ख) अपनी पत्नी और बच्चों तक
   (ग) समाज, गाँव और परिवार तक
   (घ) अपने खेत-खलिहान तक।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–मैं मछेरे को फेंका हुआ फैला जाल समेटते देखता हूँ।
   **कारण** (R)–मुझे अपने पूर्वजों की याद हो आती है।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'देश एक बाग है।'– पंक्ति का आशय है–**
   (क) देश में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
   (ख) देश में फलों की भरमार है।
   (ग) देश में हरे-भरे वृक्ष हैं।
   (घ) देश में अनेक धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं।
5. **पुराने समय में कवि के पूर्वज विश्वास करते थे–**
   (क) रंग-भेद पर
   (ख) जाति और धर्म के भेद पर
   (ग) भाषा और क्षेत्र के भेदभाव पर
   (घ) भिन्न वर्गों और जातियों की एकता पर।

**उत्तर**– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

**(10)** बिन बैसाखी अपनी शर्तों पर, मैं मदमस्त चला।
सब्ज़बाग को दिखा-दिखा
दुनिया रह-रह मुसकाई।
कंचन और कामिनी ने भी
अपनी छटा दिखाई।
सतरंगे जग के साँचे में, मैं न कभी ढला।।
चिनगारी पर चलते-चलते
रुका-झुका ना पल-छिन।
गिरे हुओं को रहा उठाता
गले लगाता अनुदिन।
हालाहल पीते-पीते ही मैं जीवन-भर चला।।
कितने बढ़े-चढ़े द्रुत चलकर
शैलशिखर श्रृंगों पर।
कितने अपनी लाश लिए
फिरते अपने कंधों पर।
सबकी अपनी अलग नियति है, है जीने की कला।।
आँधी से जूझा करना ही
बस आता है मुझको।
पीड़ाओं के संग-संग जीना
भाता है बस मुझको।
मैं तटस्थ, जो भी जग समझे कह ले बुरा-भला।।

1. **सतरंगी संसार कवि को मोहित क्यों नहीं कर सका–**
   (क) सांसारिकता के प्रति उसका मोह नहीं है
   (ख) मोहकता उसको मोहने में समर्थ नहीं है
   (ग) उसको केवल अपने सिद्धांतों से प्यार है
   (घ) वह सांसारिक मोह को तुच्छ समझता है।
2. **कवि को जीवन में क्या रास नहीं आया–**
   (क) कष्टों से भरे मार्ग पर चलना
   (ख) दीनों का उद्धार करना
   (ग) सुखमय क्षणों को भोगना
   (घ) आजीवन वेदनाओं का विषपान करना।
3. **सबकी नियति और जीवन-शैली भिन्न होने का क्या प्रभाव है–**
   (क) कोई धनी है तो कोई धनहीन है
   (ख) कोई उन्नति करता है तो कोई निराश रहता है
   (ग) कोई सुख भोग रहा है तो कोई दुःख
   (घ) कोई स्वस्थ है तो कोई रोगी है।
4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–कंचन और कामिनी ने मुझे अपना सौंदर्य दिखाया।
   **कारण** (R)–मैं संसार के सतरंगे साँचे में कभी नहीं ढला।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) व (R) सही हैं, और कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
5. **'दुखों को झेलता हुआ मैं जीवनभर चलता रहा।' निम्नलिखित किस पंक्ति का यह आशय है–**
   (क) बिन बैसाखी अपनी शर्तों पर, मैं मदमस्त चला।
   (ख) चिंगारी पर चलते-चलते रुका-झुका न पल-छिन।
   (ग) हलाहल पीते-पीते ही मैं जीवन-भर चला।
   (घ) मैं तटस्थ, जो भी जग समझे कह ले भला-बुरा।

**उत्तर**– **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग)।

**(11)** कोलाहल हो,
या सन्नाटा, कविता सदा सृजन करती है,
जब भी आँसू
हुआ पराजित, कविता सदा जंग लड़ती है।
जब भी कर्ता हुआ अकर्ता,
कविता ने जीना सिखलाया
यात्राएँ जब मौन हो गईं
कविता ने चलना सिखलाया।
जब भी तम का
जुल्म चढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है,
जब गीतों की फसलें लुटतीं
शीलहरण होता कलियों का,
शब्दहीन जब हुई चेतना
तब-तब चैन लुटा गलियों का
जब कुर्सी का
कंस गरजता, कविता स्वयं कृष्ण बनती है।
अपने सभी हो गए पराए
यूँ झूठे अनुबंध हो गए
घर में ही वनवास हो रहा
यूँ गूँगे संबंध हो गए। ***(CBSE 2015, 19)***

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **कविता को सृजनात्मक क्यों कहा गया है–**
(क) वह हर परिस्थिति में सृजक की भूमिका निभाती है
(ख) वह गुणों की सराहना करती है
(ग) वह मौन यात्रा करती है
(घ) वह कवि का विश्वास दृढ़ करती है।
2. **'कविता सदा जंग लड़ती है' का भाव है–**
(क) कविता में हारे हुए को सांत्वना देने की क्षमता है
(ख) कविता संघर्ष की प्रेरणा देती है
(ग) कविता सदा आनंद देती है
(घ) कविता चुनौती स्वीकार करने को बाध्य करती है।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–सभी अपने, पराए हो गए हैं।
**कारण** (R)–सभी अनुबंध झूठे हो गए हैं।
(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं, और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
4. **कविता कब कृष्ण बनती है–**
(क) जब महाभारत होती है
(ख) जब शासक कंस बन जाता है
(ग) जब गोपियाँ नृत्य करती हैं
(घ) जब कवि उसे कृष्ण बनाता है।
5. **'संबंधों में दूरियाँ बढ़ने लगीं।' यह भाव किस पंक्ति में आया है–**
(क) यूँ गूँगे संबंध हो गए
(ख) शब्दहीन जब हुई चेतना
(ग) जब भी तम का जुल्म चढ़ा है
(घ) यात्राएँ जब मौन हो गईं।

**उत्तर**– **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क)।

**(12)** जब बचपन तुम्हारी गोद में
आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी
बाहर आने से घबराने लगे,
समझो कुछ गलत है।
जब तलवारें फूलों पर,
ज़ोर आज़माने लगें
जब मासूम आँखों में
खौफ़ नज़र आने लगे
समझो कुछ गलत है।
जब किलकारियाँ सहम जाएँ
जब तोतली बोलियाँ, खामोश हो जाएँ, समझो...
कुछ नहीं, बहुत कुछ गलत है
क्योंकि ज़ोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में, हर जगह, टपकने चाहिए थे आँसू
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूटकर
शर्म से झुकनी चाहिए थीं, इंसानी सभ्यता की गर्दनें
शोक का नहीं, सोच का वक्त है
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठाकर
खड़ा हो सकता है इनसान
समझो कि बहुत कुछ गलत है। *(CBSE 2016)*

1. **माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है–**
(क) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
(ख) उसे प्रदूषण का डर सता रहा है
(ग) उसे माँ ने बाहर की वास्तविकता बता दी है
(घ) बाहर का वातावरण अनुकूल नहीं है।
2. **कविता में 'मासूम आँखें' किसका प्रतीक हैं–**
(क) सुंदर आँखों का (ख) स्त्रियों का
(ग) बच्चों का (घ) गरीबों का।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–पूरी दुनिया में हर जगह आँसू टपकने चाहिए थे।
**कारण** (R)–ऊपर वाले को फूट-फूटकर रोना चाहिए था।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं, और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
4. **कुछ भी गलत नहीं है, यदि–**
(क) भ्रूण हत्या होने लगे
(ख) बच्चों पर अत्याचार होने लगे
(ग) बालश्रम बढ़ जाए
(घ) बचपन गोद में आने लगे।
5. **कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है–**
(क) सोच-विचार का (ख) शोक मनाने का
(ग) मातम मनाने का (घ) उत्सव मनाने का।

**उत्तर**– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (क)।

**(13)** जन्म दिया माता-सा जिसने, किया सदा लालन-पालन,
जिसके मिट्टी-जल से ही है रचा गया हम सबका तन।
गिरिवर नित रक्षा करते हैं, उच्च उठा के शृंग महान,
जिसके लता-द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान।
माता केवल बाल-काल में निज अंक में धरती है,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन-पोषण करती है।
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्युपर्यंत,
जिसके दया-प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं,
हिंदू जलते, यवन-ईसाई शरण इसी में पाते हैं।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी,
उसके चरण-कमल पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी।। *(CBSE 2016)*

1. **'जन्म दिया माता-सा जिसने'–यहाँ 'जिसने' से तात्पर्य है–**
(क) माँ से (ख) मातृभूमि से
(ग) पिता से (घ) धरती से।
2. **गिरिवर हमारी रक्षा किस प्रकार करते हैं–**
(क) अपने शिखरों को उठाकर (ख) छाया प्रदान करके
(ग) गोद में लेकर (घ) भोजन प्रदान करके।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **मातृभूमि माँ से भी बढ़कर है, क्योंकि वह–**
   (क) बचपन में गोद में खिलाती है
   (ख) सदा दयालु बनी रहती है
   (ग) आजीवन लालन-पालन करती है
   (घ) बीमारी में भी देखभाल करती है।
4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–मृत्यु होने पर शरीर के कण मातृभूमि में मिल जाते हैं।
   **कारण** (R)–हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सब इसी में शरण पाते हैं।
   (क) कथन (A) व (R) सही हैं, और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) गलत हैं, किंतु कारण (R) सही है।
5. **'चरण-कमल' में अलंकार है–**
   (क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
   (ग) अनुप्रास अलंकार (घ) यमक अलंकार।

उत्तर– 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (क)।

**(14)** सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज़ आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है
हर तालाब का सिमट रहा है कोना
यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है
वह ज़ेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास ज़ेब है न बोतल बंद पानी। *(CBSE 2017)*

1. **'सूख रहा है समय' कथन का आशय है–**
   (क) गरमी बढ़ रही है
   (ख) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे हैं
   (ग) फूल मुरझाने लगे हैं
   (घ) नदियाँ सूखने लगी हैं।
2. **हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है–**
   (क) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे हैं
   (ख) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है
   (ग) नदियों का इतिहास रोचक है
   (घ) लोगों को नदियों की जानकारी नहीं है।
3. **"पँखुरी की साँस सूख रही है
   जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी"
   ऐसी परिस्थिति किस कारण उत्पन्न हुई–**
   (क) मौसम बदल रहे हैं
   (ख) अब पक्षी के पास सुंदर चोंच नहीं रही
   (ग) पतझड़ के कारण पत्तियाँ सूख रही थीं
   (घ) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता।
4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन** (A)–आँगन में रखा गिलास का पानी सूख रहा है।
   **कारण** (R)–मनुष्य बोतल बंद पानी खरीद रहा है।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) व (R) सही हैं, और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
5. **'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में व्यंग्य है–**
   (क) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते
   (ख) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं हैं
   (ग) जीव निराश और हताश बैठे हैं
   (घ) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ख)।

**(15)** एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़? जड़ तो जड़ ही है;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला, बढ़ा हूँ,
मज़बूत बना हूँ इसी से तो तना हूँ,
एक दिन डालों ने भी कहा था,
तना? किस बात पर है तना?
जहाँ बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना;
प्रगतिशील जगती में तिल-भर नहीं डोला है
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूटीं, दिशा-दिशा में गईं
ऊपर उठीं, नीचे आईं
हर हवा के लिए दोल बनीं लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाईं
(पत्तियों ने भी ऐसा ही कुछ कहा, तो˙˙)
एक दिन फूलों ने भी कहा था,
पत्तियाँ? पत्तियों ने क्या किया?
संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,
डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,
हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं;
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं–
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए–
हमारी यश-गंध दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सब की सुन पाई है, जड़ मुसकराई है! *(CBSE 2017)*

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **तने का जड़ को 'जड़' कहने से क्या अभिप्राय है–**
   (क) मज़बूत है (ख) समझदार है
   (ग) मूर्ख है (घ) उदास है।
2. **डालियों ने तने के अहंकार को क्या कहकर चूर-चूर कर दिया–**
   (क) जड़ नीचे है तो यह ऊपर है
   (ख) यों ही तना रहता है
   (ग) उसका मोटापा हास्यास्पद है
   (घ) प्रगति के पथ पर एक क़दम भी नहीं बढ़ा।
3. **पत्तियों के बारे में क्या नहीं कहा गया है–**
   (क) संख्या के बल से बलवान् हैं
   (ख) हवाओं के बल पर डोलती हैं
   (ग) डालों के कारण चंचल हैं
   (घ) सबसे बलशाली हैं।
4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–तने ने कहा–मैं ज़मीन से ऊपर उठा, बाहर निकला और बढ़ा हूँ।
   **कारण (R)**–इसलिए मैं मज़बूत हूँ और तना हूँ।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) गलत हैं, किंतु कारण (R) सही है।
5. **जड़ क्यों मुसकराई–**
   (क) सबने अपने अहंकार में उसे भुला दिया
   (ख) फूलों ने पत्तियों को भुला दिया
   (ग) पत्तियों ने डालियों को भुला दिया
   (घ) डालियों ने तने को भुला दिया।

**उत्तर**– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क)।

**(16)** ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियो, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरख्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से वह सुनता है
ग़मज़दों और रंजीदों की।
जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से–
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से दुनिया ऊँचे
आदर्शों की,
उम्मीदों की
साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे
यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;
प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे
यह जाति
योगियों, संतों
और शहीदों की। *(CBSE 2017)*

1. **कवि देशवासियों को क्या कहना चाहता है–**
   (क) निराशा और जड़ता छोड़ो
   (ख) जागो, आगे बढ़ो
   (ग) पढ़ो, लिखो, कुछ करो
   (घ) डरो मत, ऊँचे चढ़ो।
2. **कवि किसकी और किससे प्रार्थना की बात कर रहा है–**
   (क) भगवान और जनता
   (ख) दुःखी लोग और ईश्वर
   (ग) देशवासी और सरकार
   (घ) युवा वर्ग और ब्रिटिश सत्ता।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–युग-युग में अंतर्मन में एक साधना प्रबल रहे।
   **कारण (R)**–भारतभूमि बुद्ध और गांधी जैसे पुत्रों की जननी बनी रहे।
   (क) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **'यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे'-का भाव है–**
   (क) इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया
   (ख) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें
   (ग) यह धरती बुद्ध और बापू जैसी है
   (घ) यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी।
5. **कवि क्या प्रार्थना करता है–**
   (क) योगी, संत और शहीदों का हम सब सम्मान करें
   (ख) युगों-युगों तक यह धरती बनी रहे
   (ग) धरती माँ का वंदन करते रहें
   (घ) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें।

**उत्तर**– **1.** (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (घ)।

**(17)** नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
जो कुछ है
सब पानी का है।
जैसे पोथियों में उनका अपना
कुछ नहीं होता
कुछ अक्षरों का होता है
कुछ ध्वनियों और शब्दों का
कुछ पेड़ों का कुछ धागों का
कुछ कवियों का
जैसे चुल्हे में चूल्हे का अपना
कुछ भी नहीं होता
न जलावन, न आँच, न राख
जैसे दीये में दीये का
न रुई, न उसकी बाती
न तेल न आग न दियली
वैसे ही नदी में नदी का
अपना कुछ नहीं होता।
नदी न कहीं आती है न जाती है
वह तो पृथ्वी के साथ
सतत पानी-पानी गाती है।
नदी और कुछ नहीं
पानी की कहानी है
जो बूँदों से सुन कर बादलों को सुनानी है। *(CBSE 2017)*

1. **कवि ने ऐसा क्यों कहा कि नदी का अपना कुछ भी नहीं सब पानी का है–**
   (क) नदी का अस्तित्व ही पानी से है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) पानी का महत्त्व नदी से ज़्यादा है
(ग) ये नदी का बड़प्पन है
(घ) नदी की सोच व्यापक है।

2. **पुस्तक-निर्माण के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है–**
(क) ध्वनियों और शब्दों का महत्त्व है
(ख) पेड़ों और धागों का योगदान होता है
(ग) कवियों की कलम उसे नाम देती है
(घ) पुस्तकालय उसे सुरक्षा प्रदान करता है।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन (A)**–नदी और कुछ नहीं केवल पानी की कहानी है।
**कारण (R)**–यह कहानी बूँदों से सुनकर बादलों को सुनानी है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

4. **नदी की स्थिरता की बात कौन-सी पंक्ति में कही गई है–**
(क) नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
(ख) वह तो पृथ्वी के साथ सतत पानी-पानी गाती है
(ग) नदी न कहीं आती है न जाती है
(घ) जो कुछ है सब पानी का है।

5. **बूँदें बादलों से क्या कहना चाहती होंगी–**
(क) सूखी नदी और प्यासी धरती की पुकार
(ख) भूखे-प्यासे बच्चों की कहानी
(ग) पानी की कहानी
(घ) नदी की खुशियों की कहानी।

**उत्तर**– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(18)** तुम्हारी निश्चल आँखें
तारों-सी चमकती हैं मेरे अकेलेपन की रात के आकाश में
प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता है
ज़रूर दिखाई देती होंगी नसीहतें
नुकीले पत्थरों-सी
दुनिया भर के पिताओं की लंबी कतार में
पता नहीं कौन-सा कितना करोड़वाँ नंबर है मेरा
पर बच्चों के फूलोंवाले बगीचे की दुनिया में
तुम अव्वल हो पहली कतार में मेरे लिए
मुझे माफ़ करना मैं अपनी मूर्खता और प्रेम में समझता था
मेरी छाया के तले ही सुरक्षित रंग-बिरंगी दुनिया होगी तुम्हारी
अब जब तुम सचमुच की दुनिया में निकल गई हो
मैं खुश हूँ सोचकर
कि मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई। ***(CBSE 2018)***

1. **निश्चल आँखें कैसी चमकती हैं–**
(क) मोती-सी (ख) हीरे-सी
(ग) तारों-सी (घ) झील-सी।

2. **काव्यांश में किसके अकेलेपन की बात की गई है–**
(क) पिता के (ख) माता के
(ग) पुत्र के (घ) पुत्री के।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन (A)**–संतान को पिता का प्रेम दिखाई नहीं देता है।
**कारण (R)**–उसे पिता की नसीहतें दिखाई देती हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **माता-पिता को अपना बच्चा सर्वश्रेष्ठ लगता है; क्योंकि–**
(क) वह सुंदर होता है
(ख) उन्हें उससे अत्यधिक प्रेम होता है
(ग) वह उनकी सेवा करता है
(घ) वह उनका भविष्य होता है।

5. **कवि ने किस बात को अपनी मूर्खता माना है–**
(क) बच्चे की रंगीन दुनिया उसकी छत्रछाया के नीचे है
(ख) उसका बच्चा सबसे सुंदर है
(ग) उसका बच्चा उसे बहुत प्यार करता है
(घ) उसके बच्चे को उसकी बातें अच्छी लगती हैं।

**उत्तर**– **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क)।

**(19)** जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर,
कब अंबर शोक मनाता है?
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाई फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुबन शोर मचाता है?
जो बीत गई सो बात गई। ***(CBSE 2019)***

1. **'जो बीत गई सो बात गई' का तात्पर्य है–**
(क) बीता समय वापस नहीं आता
(ख) कही हुई बात दूर चली जाती है
(ग) बुरा समय बीत जाता है
(घ) समय बीत जाने पर बात बन जाती है।

2. **टूटे तारों पर शोक कौन नहीं मनाता–**
(क) धरती (ख) अंबर
(ग) समुद्र (घ) संसार।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन (A)**–मधुबन सूखे फूलों के लिए कभी शोर नहीं मचाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

**कारण (R)**–जो बीत जाती है, वह बात समाप्त हो जाती है।

(क) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

(ख) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

**4. सूखे फूलों पर मधुबन क्या करता है–**

(क) शोर मचाता है (ख) शोर नहीं मचाता

(ग) आँसू बहाता है (घ) हँसता है।

**5. आकाश की ओर कब देखना चाहिए–**

(क) जब कोई प्रियजन बिछड़ जाए

(ख) जब कोई अतिथि घर आए

(ग) जब बादल छा जाएँ

(घ) जब वर्षा समाप्त हो जाए।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क)।

**(20)** देश के आज़ाद होने पर बिता लंबी अवधि
अब असह्य इस दर्द से हैं धमनियाँ फटने लगीं
व्यर्थ सीढ़ीदार खेतों में कड़ी मेहनत किए
हो गया हूँ और जर्जर, बोझ ढोकर थक गया
अब मरूँगा तो जलाने के लिए मुझको,
अरे! दो लकड़ियाँ भी नहीं होंगी सुलभ इन जंगलों से।
वन कहाँ हैं? जब कुल्हाड़ों की तृषा है बढ़ रही
काट डाले जा रहे हैं मानवों के बंधु तरुवर
फूल से, फल से, दलों से, मूल से, तरु-छाल से
सर्वस्व देकर जो मनुज को लाभ पहुँचाते सदा
कट रहे हैं ये सभी वन,
पर्वतों की दिव्य शोभा है निरंतर हो रही विद्रूप,
ऋतुएँ रो रहीं गगनचुंबी वन सदा जिनके हृदय से
फूटते झरने, नदी बहती सुशीतल नीर की
हर पहर नित चहकते हैं कूकते रहते विहग
फूल पृथ्वी का सहज श्रृंगार करते हैं जहाँ।

*(CBSE SQP 2021)*

**1. 'अब असह्य इस दर्द से'– में असह्य दर्द का कारण क्या है–**

(क) आज़ादी के बाद लंबी अवधि बिता देना

(ख) खेतों में कड़ी मेहनत करना

(ग) वनों का न रहना

(घ) जर्जर हो जाना।

**2. 'जब कुल्हाड़ों की तृषा है बढ़ रही'– कथन से क्या तात्पर्य है–**

(क) हिंसा बढ़ना

(ख) सामाजिक क्रांति होना

(ग) युद्ध का अवसर आना

(घ) पेड़ों को काटकर भी तृप्त न होना।

**3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–मैंने सीढ़ीदार खेतों में व्यर्थ में ही कड़ी मेहनत की है।

**कारण (R)**–मैं कमज़ोर हो गया हूँ और बोझा ढो-ढोकर थक गया हूँ।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

**4. पेड़ों को मानव-बंधु क्यों कहा गया है–**

(क) मानव पेड़ों का व्यापार करता है

(ख) पेड़ हमें अपना सर्वस्व देते हैं

(ग) पेड़ हमें ईंधन देते हैं

(घ) मानव पेड़ों का रक्षक है।

**5. इस कविता में क्या प्रेरणा दी गई है–**

(क) स्वच्छता की (ख) स्वार्थी बनने की

(ग) वन-कटाई की (घ) वन-संरक्षण की।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (घ)।

**(21)** मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने लाई थी।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा विजय-गर्व था झलक रहा।।
मैंने पूछा 'यह क्या लाई'? बोल उठी वह 'माँ, काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा–'तुम्हीं खाओ'।।
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर मुझ में नवजीवन आया।।
मैं भी उसके साथ खेलती खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।।
जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया।।

*(CBSE SQP 2021)*

**1. काव्यांश के आधार पर बताइए कि कवयित्री ने अपने बचपन को किस रूप में पुनः पाया–**

(क) सहेली के रूप में

(ख) अपनी बिटिया के रूप में

(ग) बचपन की मधुर स्मृति के रूप में

(घ) माँ के रूप में।

**2. कवयित्री वर्षों से किसे खोज रही थीं–**

(क) अपनी बेटी को (ख) बचपन की सहेली को

(ग) अपनों के साहचर्य को (घ) अपने बचपन को।

**3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन (A)**–मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।

**कारण (R)**–नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।

(क) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

(ख) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

**4. मिट्टी खिलाने आई बेटी की छवि कैसी थी–**

(क) उसका शरीर धूल-धूसरित था और आँखों में डर था

(ख) उसका अंग-अंग पुलकित हो रहा था और उसकी भोली आँखों से उत्सुकता छलक रही थी

(ग) उसकी आँखों में शरारत नज़र आ रही थी

(घ) उसकी छवि मनमोहक और आकर्षक थी।

**5. बेटी और माँ के बीच क्या संवाद हुआ–**

(क) माँ ने पूछा 'यह क्या लाई हो' और बेटी बोल उठी 'माँ! काओ।'

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) माँ ने पूछा 'मिट्टी क्यों खा रही हो?' और बेटी बोल उठी 'माँ! तुम भी खाओ।'
(ग) माँ ने पूछा 'क्या खेल रही हो?' और बेटी बोल उठी 'माँ! आओ तुम भी खेलो।'
(घ) माँ ने पूछा 'हाथ में क्या लाई हो?' और बेटी बोल उठी 'माँ! तुम्हारे लिए मिट्टी लाई हूँ।'

उत्तर– 1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (क)।

(22) चमड़े का रंग मनुष्य-मनुजता को बाँटे
यह है जघन्य अपमान प्रकृति का, मानव का
धरती पर घृणा जिए, मर जाए प्रीति प्यार
यह धर्म मनुज का नहीं, धर्म दानव का।
हा! प्रेम-नाम ही है रे जिसका महाकाव्य
यदि वहीं नहीं तो जीवन का क्या अर्थ यहाँ
यदि वही नहीं तो सृष्टि सभ्यता जड़ मृत है
यदि वही नहीं तो ज्ञान सकल है व्यर्थ यहाँ।
है गर्व तुम्हें जो अपनी उज्जवल सफ़ेदी पर
वह मिथ्या है, छल है, घमंड है चेहरे का
रंगों का राजा तो हैं रंग भीतर वाला
बाहरी रंग तो द्वारपाल है पहरे का।
दुनिया ऐसी तस्वीर कि जिसके खाके में
आधी गोराई तो आधी कजलाई है,
पाँवों के नीचे यदि गौर वर्ण वसुधा
तो सिर पर श्याम गगन की छाया छाई है। *(CBSE 2021 Term-1)*

1. **काव्यांश में मुख्य रूप से किस समस्या का उल्लेख किया गया है–**
(क) लिंगभेद (ख) असमानता
(ग) रंगभेद (घ) गैर-बराबरी।

2. **कवि के अनुसार जीवन व्यर्थ कब होता है–**
(क) प्रेम नहीं होने पर (ख) मनुष्यता से हीन होने पर
(ग) सभ्यता के जड़ होने पर (घ) ज्ञान से विहिन होने पर।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–रंगों का राजा तो भीतरी रंग है।
**कारण** (R)–बाहरी रंग तो पहरा देने वाला द्वारपाल है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

4. **कवि कहता है 'रंगों का राजा तो है रंग भीतर वाला'–भीतर वाले रंग का क्या तात्पर्य है–**
(क) व्यक्तित्त्व का आकर्षण (ख) वास्तविक खूबसूरती
(ग) व्यक्तिगत आचरण (घ) आंतरिक गुण और स्वभाव।

5. **गोरे और काले वर्ण के लिए प्रकृति से कौन-सा प्रतीक दिया गया है–**
(क) राधा और कृष्ण का
(ख) धरती और आसमान का
(ग) नदियों और सागर का
(घ) मनुज और दानव का।

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ख)।

(23) हाथ हैं दोनों सधे-से
गीत प्राणों के रुँधे-से
और उसकी मूठ में, विश्वास
जीवन के बँधे-से
धकधकाती धरणि थर थर
उगलता अंगार अंबर
भुन रहे तलुवे, तपस्वी-सा
खड़ा वह आज तन कर
शून्य-सा मन, चूर है तन
पर न जाता वार खाली
चल रही उसकी कुदाली
वह सुखाता खून पर-हित
वाह रे साहस अपरिमित
युगयुगों से वह खड़ा है
विश्व-वैभव से अपरिचित
जल रहा संसार धू-धू
कर रहा वह वार कह 'हूँ'
साथ में समवेदना के
स्वेद-कण पड़ते कभी चू
कौन-सा लालच ? धरा की
शुष्क छाती फाड़ डाली
चल रही उसकी कुदाली।
भूमि से रण ठन गया है
वक्ष उसका तन गया है
सोचता मैं, देव अथवा
यंत्र मानव बन गया है
शक्ति पर सोचो ज़रा तो
खोदता सारी धरा जो
बाहुबल से कर रहा है
इस धरणि को उर्वरा जो *(CBSE 2023)*

1. **और उसकी मूठ में, विश्वास–इस वाक्य में 'उसकी' संबोधन किसके लिए आया है?**
(क) संपन्न वर्ग (ख) शोषक वर्ग
(ग) युवा वर्ग (घ) श्रमजीवी वर्ग।

2. **किसान-मज़दूर को तपस्वी-सा क्यों कहा है?**
(क) उनके शरीर धूल-मिट्टी से लथपथ होने के कारण
(ख) विपरीत परिस्थितियों में भी तन कर खड़ा होने के कारण
(ग) धूप में पसीना बहाने के लिए प्रेरित होने के कारण
(घ) हिमालय के पहाड़ों पर तपस्या में लीन होने के कारण।

3. **कवि ने किसान-मज़दूर के साहस को अपरिमित क्यों कहा है?**
(क) विश्व-वैभव से अपरिचित होने के कारण
(ख) दूसरों के लिए अपना सर्वस्व लुटाने के कारण
(ग) निरंतर कुदाली चलाने के कारण
(घ) युगयुगों से खड़ा होने के कारण।

4. **किसान-मज़दूरों ने धरती को उपजाऊ कैसे बनाया?**
(क) आधुनिक तकनीक द्वारा
(ख) रासायनिक उर्वरक डालकर
(ग) पूरी शक्ति से खुदाई करके
(घ) जैविक खाद का प्रयोग करके।

5. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–किसान-मज़दूर देवता या मशीनी-मानव तुल्य है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

**कारण** (R)–अग्नि-से जलते धरती-अंबर के बीच वह सीना तान युगयुगों से परिश्रम कर रहा है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

**(24)** क्या रोकेगी मुझे विषमता, क्या झंझाओं के नर्तन।
मुझ पथिक को कब रोक सके हैं, जीवन के उत्थान-पतन।।
मैं गति का हूँ राजा,
मेरे रुके आज तक नहीं चरण।
शूलों के बदले फूलों का,
किया न मैंने कभी चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए,
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, ये तूफानों के गर्जन।।
मुझे झुलाता आया युग से,
लहरों का भीषण कंपन।
मेरी श्वास छिपाए फिरती,
ज्वालामुखियों की धड़कन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर, चाहों का उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, कटु बाधाओं के बंधन।।
मैं अटका कब, कब भटका मैं,
सतत डगर मेरा संबल।
बाँध सकी पगले कब मुझको,
यह युग की प्राचीर निबल।
आँधी हो, ओले-वर्षा हो, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये विद्युत-कंपन नर्तन।।
मैं चिंतित कब, कब कंपित मैं,
देख विषमता का संगम।
चिर प्रवाह का नूतन गायक,
युग-युग का उन्मुख सरगम।
देख चुका हूँ मैं कितने ही, भू-कंपों के सकल निपात,
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन।।

*(CBSE 2023)*

**1. जीवन के उतार-चढ़ाव किसके बाधक नहीं बन सकते ?**

(क) पथिक (ख) विद्यार्थी

(ग) राजा (घ) नागरिक।

**2. आँधी-तूफ़ान-विपदाएँ आगे बढ़ने वाले को रोकने में सफल नहीं हो सकती, क्योंकि**

(क) वह आँधी-तूफ़ान से ज्यादा सक्षम है

(ख) आँधी-तूफ़ान-विपदाएँ दिखावटी हैं

(ग) वह आशा के दीप लिए मुस्कुराता रहता है

(घ) उसे आँधी-तूफ़ान झेलने की आदत हो गई है।

**3. 'शूलों के बदले फूलों का, किया न मैंने कभी चयन।'** उपर्युक्त **पंक्तियों का भाव है–**

(क) वह तो निरंतर आगे बढ़ने में विश्वास रखता है

(ख) उसे कँटीले मार्ग पर चलकर आगे बढ़ना पसंद है

(ग) उसने कठिन बाधाओं के बंधन तोड़ना सीखा है

(घ) वह तूफ़ानों के बीच चलकर आगे बढ़ता है।

**4. 'मैं चिंतित कब, कब कंपित मैं, देख विषमता का संगम।' पंक्तियों से संदर्भ में लिखिए कि कवि किनसे चिंतित नहीं होता?**

(क) हारने की आशंका से (ख) विपरीत परिस्थितियों से

(ग) रोड़े-पत्थरों से (घ) अपरिचित राहों से।

**5. दिए गए कथनों को पढ़कर इस प्रश्न के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए : पथिक की राह में कौन-कौन रोड़े हैं?**

I. तूफ़ानों के चक्रवात

II. कठोर बाधाएँ

III. बिजलियों का कंपन

IV. बर्फ़ीली हवाएँ

**विकल्पः**

(क) I, II, IV (ख) I, II, III

(ग) I, III, IV (घ) II, III, IV

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ख)।

**(25)** भले ही अँधेरा घिरे हर दिशा से,
मगर हम नया भोर लाकर रहेंगे।
घृणा-स्वार्थ के इस कठिन संक्रमण में,
सुनो हम नया दौर लाकर रहेंगे।
प्रगति और विज्ञान का नाम लेकर,
मनुज को मनुज आज ठगने लगे हैं।
नई आर्थिक दौड़ की रोशनी में,
हमें मूल्य सब झूठ लगने लगे हैं।
मगर बात इतनी सुनो विश्व वालो,
इसी रोशनी में कभी हम बहेंगे।
सही या ग़लत रह गया क्या कहीं कुछ,
ज़रा भी उचित और अनुचित नहीं कुछ।
सुनो इस क़दर स्वार्थ टकरा रहे हैं,
पतन की नहीं और सीमा रही कुछ।
मगर हम उठेंगे प्रलय मेघ बनकर,
कठिन दुर्ग पाखंड के सब ढहेंगे।
बताना हमें सत्य सारे जगत को,
जगाना हमें सुप्त इंसानियत को।
करेगा ज़माना सदा गर्व हम पर,
हमें खोजना एकता के अमृत को।
भले ही किसी राह जाए ज़माना,
मगर हम सही राह थामे रहेंगे।

*(CBSE 2023)*

**1. कवि को विश्वास है कि**

(क) वह अंधकार को उजाले में बदलेगा

(ख) वह पुराने को नए में बदलेगा

(ग) वह रात को शाम में बदलेगा

(घ) वह दुःख को सुख में बदलेगा।

**2. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

**कथन** (A)–लोगों के स्वार्थ आपस में टकरा रहे हैं।

**कारण** (R)–पतन की कोई सीमा नहीं रही है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।

**3. भारत की किस विशेषता पर पूरा विश्व गर्व करेगा?**
(क) अहिंसक प्रवृत्ति (ख) वैज्ञानिक प्रगति
(ग) ऐतिहासिक ज्ञान (घ) एकता की भावना।

**4. 'किसी का अंधानुकरण न करके अपने लिए सही मार्ग का चयन करेंगे'–यह भाव कविता की किन पंक्तियों में आया है?**
(क) भले ही अँधेरा घिरे हर दिशा से,
मगर हम नया भोर लाकर रहेंगे
(ख) घृणा-स्वार्थ के इस कठिन संक्रमण में,
सुनो हम नया दौर लाकर रहेंगे
(ग) भले ही किसी राह जाए ज़माना,
मगर हम सही राह थामे रहेंगे
(घ) मगर बात इतनी सुनो विश्व वालो,
इसी रोशनी में कभी हम बढ़ेंगे।

**5. 'कठिन दुर्ग पाखंड के सब ढहेंगे'–काव्य पंक्ति का आशय है–**
(क) समाज से भेदभाव का नाश होगा
(ख) लोगों में स्वार्थ भावना का अंत होगा
(ग) समाज से आडंबरों का नाश होगा
(घ) अंधविश्वास रूपी किलों का पतन होगा।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

**(26)** हम धरती के बेटे बड़े कमेरे हैं।
भरी थकन में सोते फिर भी–
उठते बड़े सवेरे हैं।।
धरती की सेवा करते हैं
कभी न मेहनत से डरते हैं
लू हो चाहे ठंड सयानी
चाहे झर-झर बरसे पानी
ये तो मौसम हैं हमने
तूफ़ानों के मुँख फेरे हैं।
खेत लगे हैं अपने घर से
हमको गरज नहीं दफ़्तर से
दूर शहर से रहने वाले
सीधे-सादे, भोले-भाले
रखवाले अपने खेतों के
जिनमें बीज बिखेरे हैं।
हाथों में लेकर हल-हँसिया
गाते नई फसल के रसिया
धरती को साड़ी पहनाते
दूर-दूर तक भूख मिटाते
मुट्ठी पर दानों को रखकर
कहते हैं बहुतेरे हैं
हम धरती के बेटे बड़े कमेरे हैं।
भरी थकन में सोते फिर भी–
उठते बड़े सवेरे हैं।। ***(CBSE SQP 2023-24)***

**1. 'हम धरती के बेटे बड़े कमेरे हैं।' में कमेरे से आशय है–**
(क) परिश्रमी (ख) काम के
(ग) किसान (घ) मज़दूर।

**2. कवि ने किसानों को 'फसलों का रसिया' कहा है क्योंकि वे–**
(क) फसलों को उगाते हैं (ख) फसलों को काटते हैं
(ग) फसलों से प्रेम करते हैं (घ) फसलों को बेचते हैं।

**3. किसान 'धरती की सेवा' .................................. करते हैं।'**
(क) खेतों में फसल उगाकर
(ख) सर्दी, गर्मी बरसात सहकर
(ग) बिना विश्राम परिश्रम कर
(घ) खेतों के पास घर बनाकर।

**4. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
**कथन** (A)–हमारे घर खेतों के पास स्थित होते हैं।
**कारण** (R)–हमारे घर शहरों से दूर होते हैं।
(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कथन (A), (R) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कथन (A), (R) की सही व्याख्या नहीं है।

**5. 'हम किसानों ने धरती को फसलों के आवरण से ढक दिया है।' निम्नलिखित किस पंक्ति का यह आशय है–**
(क) तूफ़ानों के मुँह फेरे हैं
(ख) रखवाले अपने खेतों के
(ग) धरती को साड़ी पहनाते
(घ) दूर-दूर तक भूख मिटाते।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

# अभ्यास प्रश्न

***निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों/काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–***

**(1)** विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्यार्थीकाल में बालक में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवनभर वही संस्कार अमिट रहते हैं; इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है। यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसका स्वास्थ्य सुंदर बनता है। यदि मन लगाकर अध्ययन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है। जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है। इसी प्रकार विद्यार्थीकाल में जो बालक श्रम, अनुशासन एवं समय नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है। सभ्य नागरिक के लिए जिन-जिन गुणों की आवश्यकता है, उन गुणों के लिए विद्यार्थीकाल ही तो सुंदर पाठशाला है। यहाँ पर अपने साथियों के बीच रहकर वे सभी गुण आ जाने आवश्यक हैं, जिनकी विद्यार्थी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **विद्यार्थी जीवन को क्या माना जाता है–**
   (क) मानव जीवन की रीढ़ (ख) मौज-मस्ती का समय
   (ग) चिंतायुक्त जीवन (घ) सुदृढ़ जीवन।
2. **विद्यार्थी जीवन में कष्ट सहन करने से क्या होता है–**
   (क) बालक कमज़ोर हो जाता है
   (ख) बालक का स्वास्थ्य सुंदर बनता है
   (ग) बालक उद्दंड हो जाता है
   (घ) बालक डरपोक बन जाता है।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–विद्यार्थीकाल के संस्कार बालक में जीवनभर अमिट रहते हैं।
   **कारण (R)**–वह काल आधारशिला कहा जाता है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **'विद्यार्थीकाल में मन लगाकर पढ़ने से बालक को अनेक लाभ हैं'–उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) उसे ज्ञान प्राप्त होता है।
   (2) उसका मानसिक विकास होता है।
   (3) उसे बल प्राप्त होता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **विद्यार्थी जीवन में अनुशासित और परिश्रमी बालक की तुलना किससे की है–**
   (क) मिट्टी के एक घड़े से
   (ख) एक खिलौने से
   (ग) प्रारंभ से सुंदर सिंचन एवं खाद मिले वृक्ष से
   (घ) प्रारंभ से उपेक्षित वृक्ष से।

**(2)** निःसंदेह सहजता से हर एक दिन भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ जीते हुए, महिलाएँ किसी भी समाज का स्तंभ हैं। लेकिन आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज उनकी भूमिका को नज़रअंदाज़ करता है। इसके चलते महिलाओं को बड़े पैमाने पर असमानता, उत्पीड़न, वित्तीय निर्भरता और अन्य सामाजिक बुराइयों का खामियाजा सहन करना पड़ता है। भारत में महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता के बहुत-से कारण सामने आते हैं। प्राचीनकाल की अपेक्षा मध्यकाल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफ़ी कमी आई। जितना सम्मान उन्हें प्राचीनकाल में दिया जाता था, मध्यकाल में वह सम्मान घटने लगा था। आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण महिलाएँ सदियों से घर तथा खेतों में पुरुषों के बराबर ही काम करती आई हैं, लेकिन वहाँ उन्हें सामंती सोच के कारण दूसरे दर्जे का नागरिक ही माना जाता रहा है। अब ग्रामीण समाज की सोच बदलने का वक्त आ गया है। सामाजिक असमानता, पारिवारिक हिंसा, अत्याचार और आर्थिक अनिर्भरता इन सभी से महिलाओं को छुटकारा पाना है तो ज़रूरत है महिला सशक्तीकरण की।

महिला सशक्तीकरण से महिलाएँ आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनती हैं। जिससे वे अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अपना स्थान बनाती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तीकरण है। महिला सशक्तीकरण का अर्थ है–महिलाओं को राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्रों में बराबर का भागीदार बनाया जाए। भारतीय महिलाओं का सशक्तीकरण बहुत हद तक भौगोलिक (शहरी और ग्रामीण), शैक्षणिक योग्यता और सामाजिक एकता के ऊपर निर्भर करता है।

महिला सशक्तीकरण में महिलाएँ केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ ही नहीं हुई हैं, अपितु परिवार और समाज की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। वर्तमान समय में लोग बेटियों को बोझ समझकर दुनिया में आने से पहले ही मारें नहीं, इसलिए विकास की मुख्यधारा में महिलाओं को लाने के लिए भारत सरकार के द्वारा कई योजनाएँ चलाई गई हैं।

1. **गद्यांश के आधार पर बताइए कि महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता क्यों महसूस की गई–**
   (क) समाज में महिलाओं की स्थिति निर्बल थी
   (ख) वे आत्मनिर्भर थीं
   (ग) वे अपने निर्णय लेने में सक्षम थीं
   (घ) वे शिक्षित थीं।
2. **ग्रामीण सोच में परिवर्तन लाने के लिए क्या किया जा सकता है–**
   (क) गाँवों में सुविधाएँ उपलब्ध कराना
   (ख) सड़कें बनवाना
   (ग) अंधविश्वास और रूढ़ियों का विरोध
   (घ) शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–परिवार और समाज की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं।
   **कारण (R)**–अब लोग बेटियों को बोझ समझकर जन्म से पहले ही मारते नहीं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. **'आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज नारी की भूमिका को नज़रअंदाज़ करता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   (1) इसके कारण महिलाओं को उत्पीड़न, असमानता जैसी बुराइयों को सहना पड़ता है।
   (2) आर्थिक रूप से मज़बूत रहना पड़ता है।
   (3) एकाकी जीवन जीना पड़ता है।
   (क) (1) सही है (ख) (2) सही है
   (ग) (3) सही है (घ) (1) व (2) सही हैं।
5. **क्या महिलाओं के सशक्तीकरण का पक्ष मात्र आर्थिक रूप से सशक्त होना ही है–**
   (क) हाँ, इससे वे आत्मनिर्भर हो जाती हैं
   (ख) नहीं, इससे उन्हें दोहरी ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं
   (ग) हाँ, इससे वे शक्तिशाली बनती हैं
   (घ) नहीं, उनका भय-मुक्त, प्रतिबंधों से मुक्त होना भी आवश्यक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(3) ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?
मैं कठिन तूफ़ान कितने झेल आया,
मैं रुदन के पास हँस-हँस खेल आया।
मृत्यु-सागर-तीर पर पद-चिह्न रखकर–
मैं अमरता का नया संदेश लाया।
आज तू किसको डराना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?
शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं
हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।
तेज़ मेरी चाल आँधी क्या करेगी?
आग में मेरे मनोरथ तप चुके हैं।
आज तू किससे लिपटना चाहती है?
चाहता हूँ मैं कि नभ-थल को हिला दूँ,
और रस की धार सब जग को पिला दूँ,
चाहता हूँ पग प्रलय-गीत से मिलाकर–
आह की आवाज़ पर मैं आग रख दूँ।
आज तू किसको जलाना चाहती है?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है?

1. **कवि क्या लेकर आया है–**
   (क) नई कविताएँ (ख) नया संगीत
   (ग) अमरता का नया संदेश (घ) शोक का संदेश।
2. **निराशा किसे डराना चाहती है–**
   (क) साहसी कवि को (ख) मननशील पाठक को
   (ग) निराश वीरों को (घ) भोले-भाले बच्चों को।
3. **कवि क्या चाहता है–**
   (क) विश्व में प्रलय
   (ख) इच्छाओं की पूर्ति
   (ग) संसार में क्रांति
   (घ) असीमित अधिकार।
4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही उत्तर विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं।
   **कारण (R)**–हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
5. **'और रस की धार सब जग को पिला दूँ।'– पंक्ति का आशय है–**
   (क) फलों का रस पिलाना
   (ख) गन्ने का रस पिलाना
   (ग) वीरता का संचार करना
   (घ) प्रेम-रस का संचार करना।

(4) जब बचपन तुम्हारी गोद में
आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी
बाहर आने से घबराने लगे,
समझो कुछ गलत है।
जब तलवारें फूलों पर,
ज़ोर आज़माने लगें
जब मासूम आँखों में
खौफ़ नज़र आने लगे
समझो कुछ गलत है।
जब किलकारियाँ सहम जाएँ
जब तोतली बोलियाँ, खामोश हो जाएँ, समझो...
कुछ नहीं, बहुत कुछ गलत है
क्योंकि ज़ोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में, हर जगह, टपकने चाहिए थे आँसू
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूटकर
शर्म से झुकनी चाहिए थीं, इंसानी सभ्यता की गर्दनें
शोक का नहीं, सोच का वक्त है
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठाकर
खड़ा हो सकता है इनसान
समझो कि बहुत कुछ गलत है।

1. **माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है–**
   (क) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
   (ख) उसे प्रदूषण का डर सता रहा है
   (ग) उसे माँ ने बाहर की वास्तविकता बता दी है
   (घ) बाहर का वातावरण अनुकूल नहीं है।
2. **कविता में 'मासूम आँखें' किसका प्रतीक हैं–**
   (क) सुंदर आँखों का
   (ख) स्त्रियों का
   (ग) बच्चों का
   (घ) गरीबों का।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   **कथन (A)**–पूरी दुनिया में हर जगह आँसू टपकने चाहिए थे।
   **कारण (R)**–ऊपर वाले को फूट-फूटकर रोना चाहिए था।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) व (R) सही हैं, किंतु कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) व (R) सही हैं और कारण (R), (A) की सही व्याख्या है।
4. **कुछ भी गलत नहीं है, यदि–**
   (क) भ्रूण हत्या होने लगे
   (ख) बच्चों पर अत्याचार होने लगे
   (ग) बालश्रम बढ़ जाए
   (घ) बचपन गोद में आने लगे।
5. **कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है–**
   (क) सोच-विचार का
   (ख) शोक मनाने का
   (ग) मातम मनाने का
   (घ) उत्सव मनाने का।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in